: : ओ३म् : :

अक्ल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत

: : ओ३म् : :

स्वामी परमानन्द सरस्वती

:: ओ३म् ::

अक्ल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत

लेखक
स्वामी परमानन्द सरस्वती

प्रकाशक
उत्कल साहित्य संस्थान
गुरुकुल आश्रम आमसेना
नवापारा (उडीसा)

प्रथम सस्करण २०००
चैत्रशुक्ल प्रतिपदा २०५६

मूल्य ८)

॥ओ३म्॥

दो शब्द

विज्ञ पाठकों के सामने तर्क शिरोमणि श्री स्वामी परमानन्द जी की एक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक " **अक्ल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत** " उपस्थित है। कुलभूमि में इस लेखमाला के छपते ही पुस्तक की मांग आनी शुरू हो गयी थी। परन्तु हम चाहते हुए भी इसे शीघ्र पाठकों को भेंट नहीं दे सके।

पाठक देखेंगे कि किस प्रकार धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगा जा रहा है। मानव के अमूल्य जीवन को भोग का कीडा बनाया जा रहा है। वेद शास्त्र एवं बुद्धि विरुद्ध असम्भव बातों को लोगों के गले उतारा जा रहा है। जो सज्जन थोडे से भी निष्पक्ष भाव से देखेंगे उन्हें शीघ्र ही इस मत की पोप लीला का ज्ञान हो जायेगा। हम किसी भी मत की निरर्थक आलोचना नहीं करना चाहते हैं और न ही किसी को मानसिक कष्ट पहुंचाना चाहते हैं परन्तु मानव जीवन के उद्देश्य सत्य-असत्य का ज्ञान जरूर पाठकगण को देना चाहते हैं। आशा है पाठक भी इसी सद्भावना से इस लघु ग्रन्थ को पढ़कर सत्यासत्य का निर्णय कर अपने जीवन को सफल करेंगे।

स्वार्थी लोगों का तो यह स्वभाव है कि जो कोई सार्वजनिक हित में कुछ कार्य करना चाहता है उसे स्वार्थी विरोध कहते हैं अनेक प्रकार से बाधा डाल रहे हैं। परन्तु सत्य की जीत और असत्य की हार सदा होती आई है। यह विचार कर सदा सत्य को ग्रहण करना चाहिये। आशा है पाठक इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०५७
१८ मार्च १९९९

व्यवस्थापक
कुन्जदेव मनीषी

ओ३म्

अक्ल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत-

परिच्छेद-१

अतीतकाल में जो देश विश्वगुरू कहलाता था,आज उसमें शिष्य होने की योग्यता नहीं है। जो ब्राह्मण कौम,ज्ञान,कर्म और तप के बल से इस देश में धर्म के शिखर पर आसीन थी,और धर्म की रक्षक मानी जाती थी आज वह जाति विवेक और स्वाध्ययहीन होने से धर्म रक्षा करने में असमर्थ,असहाय सी प्रतीत हो रही है। इसकी नंपुसकता के कारण ही आज अनेकों पाखण्डी अपने आप को ईश्वर अवतार घोषित कर लोगों का धन,धर्म दोनों लूट रहे हैं,इससे यह सिद्ध है कि रामकृष्ण को मानने वाली कौम निश्चित रूप से सुषुप्ति अवस्था को प्राप्त हो चुकी है। इसलिये सोने वाले से डरने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता। परन्तु जो कौमें जागृत हैं उनके मार्गदर्शकों का अवतार होने का दावा आज तक किसी भी पाखण्डी ने नहीं किया जैसे- गौतम बुद्ध,महावीर,ईसा मसीह, हजरत मोहम्मद साहब, गुरूगोविन्दसिंह, आज तक किसी भी पाखण्डी ने अपने आपको इनका अवतार नहीं घोषित किया क्योंकि हर पाखण्डी यह जानता है कि इनको मानने वाले जागृत हैं और जागते हुए के मकान में सेंध नहीं लगाई जा सकती, सेंध तो सोते हुए के ही घर पर मारी जाती है। इसलिये हर पाखण्डी कोई कृष्ण का अवतार तो कोई राम से भी बडा बन जाता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस देश के लोगों को पाखण्डी ठगों से बचाने के लिए और सत्य और धर्म की रक्षा के लिये एक रक्षावाहिनी आर्य समाज की स्थापना की थी। धर्म रक्षा के लिए अनेक लोग संघर्ष करते हुए शहीद हो गये। कालान्तर में इस रक्षावाहिनी में स्वार्थ का घुन लग गया इससे यह कमजोर होने लगी परन्तु कमजोर होते हुए भी यह चौकीदार के दायित्व का निर्वहन करने लगी। गांव-गांव जाकर कहती थी 'जागते रहो,परन्तु आज इसने जागते रहो कहना भी बन्द कर दिया है परिणाम यह हुआ कि पाखण्डी ठगों का एक छत्र राज्य हो गया है। अब ये दिन दहाडे धर्म की आड में लोगों को लूट रहे हैं। **वर्तमान में दो पाखण्ड,एक गायत्री परिवार,दूसरा ब्रह्माकुमारी**,ये दोनों मत नारी की स्वाभाविक आकर्षण

शक्ति का छल–कपट से दुरूपयोग कर रहे हैं आर्य समाज से निष्कासित होकर श्रीराम शर्मा ने सन् १९५० में इस पाखण्ड की नींव मथुरा में डाली और नाम दिया गायत्री परिवार। दादा लेखराज ने पाकिस्तान करांची से निष्कासित होकर सन् १९५० में राजस्थान के माऊंट आबू पर्वत पर पाखण्ड का वृक्षारोपण किया और नाम रखा **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय।**

अब पाठकों के ज्ञान वर्धन के लिए दादा लेखराज का संक्षिप्त विवरण लिख रहा हूं। इसका जन्म बल्लभाचार्य के सम्प्रदाय को मानने वाले एक कृपलानी परिवार में हुआ था, जो ग्रामों से गेहूँ खरीद कर शहर में बेचता था। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी गुजर हो रहा था, सन् १८७६ में उसी परिवार में इसका जन्म हुआ था। इनकी पत्नी का नाम यशोदा था,वह राधा–कृष्ण की भक्त थी उसके गर्भ से तीन संताने हुई,एक लडका दो लडकियां,लडके का नाम नारायण था और बडी लडकी का विवाह मंघराम के पुत्र के साथ हुआ था। वह अपने पति को छोडकर ब्रह्माकुमारी बन गई और नाम रखा निर्मला शान्ता,जो कलकत्ता कार्यालय की इन्चार्ज है और छोटी लडकी का नाम पुट्टू था उसका विवाह एक स्कूल मास्टर के साथ कर दिया जो इनकी बिरादरी का नहीं था। अपना नाम बदलने की इनमें विशेष कला थी पहला नाम खूबचन्द कृपलानी दूसरा नाम लखीराम कृपलानी तीसरा नाम लेखराज कृपलानी चौथा नाम दादा लेखराज पांचवा नाम ब्रह्मबाबा छठवां नाम शिवबाबा। इस विविध नामधारी ने सर्वप्रथम ओम् नाम की संस्था बनाई और कीर्तन भजन से उसकी शुरूआत हुई। इसे धार्मिक संस्था और धर्म का काम समझकर शहर के लोगों ने सहयोग देना शुरू कर दिया। भजन कीर्तन के बाद कुछ मनोरंजन के चुटकुले फिर कृष्ण के नाम का प्रसाद दिया जाता था। पहले लडकों और पुरूषों को फिर एक विशेष प्रकार का प्रसाद लडकियों और महिलाओं को दिया जाता था। इस विशेष प्रसाद की यह विशेषता थी कि जो लगातार सात दिन इसे खा लेता था वह आठवें दिन बगैर प्रसाद खाये रह नहीं सकता था यही कारण था कि महिलायें अपने घरवालों के मना करने पर भी लुक छिपकर सत्संग में आती थी। इनकी पत्नी यशोदा और बेटी शान्ता जो अपने पति को छोडकर

इन्हीं के पास रहती थी। दोनों मां–बेटी शहर के उन धनाढ्य लोगों के घरों में जातीथी जिनका व्यापार समूद्र के उसपार होता था घर में केवल महिलायें होती थी। उनके घरों में जाकर सत्संग की विशेषता बताती और कहती बहन यहां तो तुम अकेले रहकर बोर होती होगी इसलिए मनोरन्जन के लिये हमारे सत्संग में आ जाया करो यह सत्संग महिलाओं का ही है यह धार्मिक सत्संग है इसमें आने से कोई नहीं रोकेगा। इनके प्रचार का केन्द्र उन महिलाओं पर ही केन्द्रित रहता था जिनके पति ज्यादा दिन वाहर रहते थे या फिर जवानी में जो विधवा हो गई हों और जिस लडकी के जवान हो जाने पर भी किसी कारण से शादी न हुई हो इस प्रकार से इनकी ओम् मण्डली में महिलाओं की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी होने लगी।

दूसरा परिच्छेद

प्रिय पाठकों !

ओम् मण्डली में जब महिलाओं की भीड होने लगी तब भजन कीर्त्तन के बाद रासलीला की शुरूआत हुई,प्रथम तो कोई महिला ही कृष्ण बनकर उनका रोल अदा करती थी,फिर स्वयं दादा लेखराज कृष्ण बनने लगे और उनकी पत्नी यशोदा राधा बनती थी। फिर प्रति दिन नई नई राधाओं का चुनाव होने लगा। इस कुकृत्य को देखकर इनके सगे समधी जो इनके बडे लडके के स्वसुर थे मुखी मंघाराम जी ने कडा विरोध करते हुए कहा कि तुम्हें शर्म आनी चाहिये कि इस उम्र में दूसरों की बहू बेटियों के साथ रंग रेलियां करते हो और इस भ्रष्टाचार में लिप्त अपनी बहू को देखकर उसे भी तिलाञ्जलि दे दी। एक और शहर के सबसे ज्यादा धनी सेठ जिनका जवान लडका मर चुका था,घर में जवान बहु थी वह इनके सत्संग में बहु के साथ आता था,उसे जब इस अश्लीलता का पता चला तो उसने भी कडा विरोध किया और अपनी बहु को इस नर्क से निकालना चाहा,परन्तु बहु तो आकण्ठ डूब चुकी थी और इन्हें इतना धन दे चुकी थी कि सेठ अंदर से खोखला हो गया था। इतने पर भी इन्होंने उस बहू को अचल सम्पत्ति लेने को उकसाया। इस तरह से इन्होंने हैदराबाद के अनेकों घरों की सुख सम्पत्ति छीन ली। विदेश में व्यापार करने वाले व्यापारी जब वापस अपने घरों में आये तबतक उनका धन, धर्म दोनों ही लूट चुका था। उनकी पत्नियां गोपी बन गई थीं। और कृष्ण के बगैर रह नहीं सकती थी। उन व्यापारियों के सामने साँप छछुन्दर की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। वे अपने पत्नियों के कृत्यों की चर्चा दूसरों से लज्जा के मारे कर भी नहीं सकते थे और न सहन कर पा रहे थे। तब वे अपनी पत्नियों को ताला लगाकर बन्द रखने लगे और ओम् मण्डली के विरोध में एन्टी ओम् मण्डली बनाई जिसके मुखिया हुए मुखी मंघाराम जो लेखराज के समधी थे। कडे प्रतिबन्धों के होते हुए भी महिलाओं का लुकछिपकर आना बन्द नहीं हुआ।ब्रह्माकुमारी गंगाजी जो कानपुर कार्यालय की संचालिका है उसने अपना संस्मरण इस प्रकार लिखा है कि माता पिता

जब सत्संग में जाने के लिये मना करते थे, तब हम उन्हें साफ कह देती थी कि बगैर खाये पीये हम रह सकती हैं परन्तु ज्ञानामृत पीये बिना हम नहीं रह सकतीं। यह ज्ञानमृत वही प्रसाद है जिसका उल्लेख पहले परिच्छेद में किया गया है। ओम् मण्डली के अनैतिक कार्यों पर हैदराबाद निवासियों का आक्रोश दिन पर दिन बढता गया अन्त में २१ जून १९३८ को शहरवासियों ने इनके लखीभवन जहां सत्संग लगता था उसको आग लगाकर नष्ट कर दिया। जनता के बढते हुए आक्रोश का जब सामना नहीं कर सके तब हैदराबाद को छोडकर करांची भाग गये, और करांची के भवन का नाम राधा भवन रखा। हैदराबाद की घटना से दुःखित होकर इनकी पत्नी यशोदा ने उनसे कहा कि अब आपकी आयु ६० वर्ष से ज्यादा हो गई है। अब हम लोगों को वानप्रस्थ लेकर कहीं एकान्त जगह पर बैठ जाना चाहिये परन्तु दादा ने पत्नी से कहा अभी ठहर जाओ अभी तो इतने लाख रूपये कमाया है इतने ही लाख और कमा लेने दो फिर वानप्रस्थ हो जावेंगे। अब देखना यह है कि रूपया कमाने का इनका साधन क्या था, इनका जन्म एक साधारण से परिवार में हुआ था इनके पिता ग्रामों से गेहूँ खरीदकर शहर में बेचते थे, गेहूँ खरीदकर फुटकर बेचने वाला व्यक्ति एकाएक हीरे जवाहारात का व्यापारी कैसे बन गया यह विचारणीय तथ्य है। यद्यपि इन्होंने अचानक धनी बन जाने के कारणों पर कभी भी प्रकाश नहीं डाला होशियार से होशियार तस्कर भी कोई ना कोई ऐसा सूत्र छोड जाता है जिसके सहारे से तथ्यों तक पहुंचा जा सकता है। इनकी पुत्रवधु ब्रह्माकुमारी व्रजइन्द्रा ने अपने संस्मरण में लिखा है कि इनके एक गुरू थे वो जब कभी भी आते थे, तो उनके स्वागत में एक ही दिन में हजारों रूपये खर्च हो जाते थे। गुरू के साथ में उनकी शिष्य मण्डली भी रहती थी। ब्रह्माकुमारियों की मदद से दादा सबको सन्तुष्ट कर देते थे। गुरू की हर आज्ञा को हर हालत में शिरोधार्य मानते थे। एक बार की बात है कि दादा के पोते का नामकरण संस्कार होना था। सायंकाल सब बड़े बड़े व्यक्तियों का भोजन था, अचानक गुरू का तार आया कि तुरन्त आओ ! दादा ने अपनी पत्नी यशोदा से कहा तुरन्त कपडे निकालो और ड्राइवर को बुलाओ क्योंकि मुझे जाना है। यशोदा ने कहा इस अवसर पर कैसे जा सकेंगे, दादा बोले सुनो गुरू का बुलावा

गोयाकाल(मौत)का बुलावा है काल(मौत) आये तो क्या हम उसे ऐसा कहकर रोक सकते हैं कि आज हमारे पोते का नामकरण है ? दादा इतना कहकर चले गये। दादा को गुरू ने इसलिये बुलाया था कि दश हजार रूपये चाहिये थे क्योंकि उन्हें सट्टे में घाटा पडा था।

इस घटना से यह सिद्ध है कि इनके गुरू जुआडी सट्टेबाज था तो तस्कर जरूर रहा होगा हर तस्कर अपने मुखिया की आज्ञा को काल मौत की आज्ञा मानता है क्योंकि उसे यह मालुम है कि आज्ञा उल्लंघन करने पर जो सजा मिलती है वह मौत से भयंकर होती है। इस सूत्र से यह निश्चित हो जाता है कि लेखराज किसी तस्कर गिरोह का सक्रिय सदस्य था।यही कारण था कि गेहूँ बेचने वाला हीरे,जवाहरत बेचने लगा। कितने आश्चर्य की बात है कि ब्रजइन्द्रा जी नें सब तो बताया परन्तु उस गुरू का नाम नहीं बताया। अभी भी यदि नाम बता दें तो असलीयत का पता लगाया जा सकता है।

तीसरा परिच्छेद

विचारशील सज्जनों,

एक अद्‌भूत जीवन कहानी नामक पुस्तक के पृष्ठ ६८ पर ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी, जो कि वर्तमान समय में अमृतसर प्रजापति ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय की इन्चार्ज है उन्होंने अपना संस्मरण निम्न प्रकार से लिखा है–कई माताओं के पति जो अपने व्यापार के सिलसिले में कुछ काल के लिये विलायत में गये हुए थे, जब वापस लौटे तो उन्होंने भोग–विलास की कामना की। विषय विकारों के प्यासे पति अपनी काम चेष्टा पूरी न होने के कारण अबला नारियों पर अत्याचार करने लगे व उन्हें ओम् मण्डली में जाने व ज्ञानामृत पीने से रोकने लगे। परन्तु जिन्होंने इतने समय से ज्ञानामृत पीकर अपने जीवन को पावन बनाया था। पृष्ठ ६९ अत: वे विनम्र भाव से हाथ जोड पति से कहती ! आत्मन् हम आपके और विश्व के कल्याण की कामना करती हैं और इस घर को वेश्यालय की बजाय शिवालय अथवा मन्दिर बनाना चाहती हैं।

समीक्षा– ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी का लेख नारी की स्वाभाविक मनोवृत्ति के विपरीत है। नारी स्वभाव से माता होती है, और माता बनने में ही गौरव प्राप्त करती है। सन्तानहीन नारी वैभव सम्पन्न होते हुए भी अन्दर से दु:खी रहती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि काम चेष्टा पुरूषों की अपेक्षा नारी में अधिक होती है। काम क्रीडा में लिप्त पत्नी को छोडकर जो पुरूष धन कमाने विलायत गया हो और धन कमाकर एक वर्ष बाद घर वापस आया हो, उसकी इच्छा पूर्ति पत्नी न करे, यह असम्भव है, वह तो पति को सन्तुष्ट करने का भरसक प्रयत्न करेगी। इतना करने पर भी यदि पति उसे ताडित करता है तो जरूर कोई गंभीर बात होगी। पति अपनी पत्नी की हजारों गलतियाँ माफ कर सकता है परन्तु वह यह कभी भी सहन नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी गोपी बनकर पर पुरूष के साथ रासलीला करे। उन व्यापारियों को यह पता चला कि हमारी पत्नियां ओम् मण्डली के नाम पर रास मण्डली में जाती है और स्वेच्छाचारिणी बन गई है। तब उन्होंने ओम् मण्डली में जाने से रोका, जो नहीं मानी उन्हें प्रताडित किया। व्यापारियों

की यह महान् सहनशीलता थी कि उन्होंने, केवल प्रताडित ही किया, शूर्पणखा नहीं बनाया।

मुझे तो ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी की बुद्धि पर तरस आता है कि उन्होंने पति–पत्नी की पवित्र रतिक्रिया को वेश्यालय की संज्ञा देकर मानव संस्कृति पर कलंक लगाया है। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी पति पत्नी के मिलन को वेश्यावृत्ति नहीं कहेगा, क्या इसी विद्या का नाम ईश्वरीय विद्या है ? अब मैं इन ईश्वरीय विद्यालय वालों से यह जानना चाहता हूँ कि दादा लेखराज से लेकर अभी तक इस संस्था के जितने भी सदस्य हैं, सभी का उत्पादन कहां से हुआ वेश्यालयों से या फिर कहीं से या आसमान से टपके हैं ? जवाब दें। क्योंकि वेश्यालय से उत्पन्न सन्तान यदि लडकी हुई तो वह वेश्या कहलाती है और लडका हुआ तो वह भडवा कहलाता है। वेश्याओं के घर कभी बारात नहीं जाती, इसलिये हर वेश्या अपने आप को कुंवारी ही कहती है, चाहे वह कई सन्तानों की माँ क्यों न बन चुकी हो। और भडवों की भी बारात किसी के घर नहीं जाती इसलिये वे भी अपने आपको कुंवारा ही कहते हैं। सारी दुनियां गृहस्थ आश्रम को देवालय मानती हैं परन्तु ये अक्ल के दिवालिये इस देवालय को वेश्यालय कहते हैं।

एक अद्भूत जीवन कहानी के पृष्ठ ३९ में दादा लेखराज कहते हैं कि मैंने ही अज्ञान काल में (अपनी बडी पुत्री को) कामवासना के सम्बन्ध में (विवाह में) दे दिया था। गोया इस जीवन में मैं ही इसके पतन का निमित्त बना था। अत: अब मेरा ही कर्त्तव्य है कि मैं उसे पवित्रता के मार्ग पर ले आऊं।

समीक्षा– ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक जो अपने आपको ईश्वर कहलाते हैं, उनका नैतिक स्तर पिता–पुत्री के सम्बन्ध को कलंकित करता है। दुनियां का हर पिता अपनी पुत्री का विवाह कर सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए पुण्य का भागी बनता है। नीच से नीच पिता भी यह नहीं सोचता कि मैं पुत्री का विवाह कामवासना की प्राप्ति के लिए कर रहा हूँ, परन्तु दादा लेखराज का कथन है कि मैंने अज्ञानता से अपनी पुत्री का विवाह कामवासना के लिए कर दिया और अब मैं उसे उसके पति से अलग करके अपने पास पवित्रता के मार्ग में ले जाऊंगा। अब देखना यह है कि वे अपनी

बडी लडकी को ही क्यों पवित्रता के मार्ग पर ले जाना चाहते हैं । अपने लडके नारायण को, छोटी लडकी पुट्टो को क्यों नहीं पवित्रता के मार्ग पर ले गये। इनका लडका नारायण कामवासना में लिप्त होकर सन्तान उत्पन्न करता रहा और ये नाती के जन्म की खुशियाँ मनाते रहे, और अपनी छोटी पुत्री को क्यों पवित्रता के मार्ग से हटाकर पतित होने के लिए विवाह कर दिया और बडी लडकी जो पति के साथ रहकर पतित हो रही थी उसे पति से अलग कर अपने पास रखकर पवित्र बना दिया। हैदराबाद में एक धनी मंघाराम के पुत्र के साथ संयोग से इनकी पुत्री का विवाह हो गया। ये अपनी पुत्री के माध्यम से उस धनी परिवार को अपने जाल में फंसाना चाहते थे। परन्तु जब मंघाराम इनके जाल में न फंसे तब उन्होंने अपनी पुत्री को अपने पास रखकर दूसरों की बहू-बेटिओं पर जाल बिछाने का काम देकर उसे पवित्रता के मार्ग पर चलाने लगे।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ४७ पर लिखा है कि बाबा को देखकर अथवा उनकी अलौकिक दृष्टि पडने से कुछ ही क्षणों में कई भाई-बहन दिव्य दृष्टि पाकर श्री कृष्ण का तथा बैकुण्ठ का साक्षात्कार करते थे और उस वृद्ध शरीर में श्रीकृष्ण को देखकर वे उन्हें जोर से पकड लेते थे बहुत बार बाबा उन बच्चियों से छूटकारा पाने के लिए वहां से हट जाते और छिप जाते थे। इनके संपर्क में आने वाली हर महिला अपने आपको गोपी समझती और दादा को कृष्ण समझ कर जोर से पकडती थी, जो जितना जोर से पकडती यानी आलिंगन करती वह उतनी ही ज्यादा पवित्रता को प्राप्त होती थी। अब मैं ब्रह्माकुमारी निर्मलशान्ता जी जो दादा लेखराज जी की बडी लडकी है उनसे यह जानना चाहता हूँ कि क्या आपको भी दिव्य दृष्टि मिली थी ? यदि मिली थी तो क्या आप भी अपने बूढे पिता को कृष्ण के रूप में देखकर आलिंगन करती थी या नहीं ? यदि नहीं तो क्या कारण है कि आप उस दिव्य दृष्टि से वंचित रह गयी जो सभी को प्राप्त होती थी और यही प्रश्न ब्रह्माकुमारी वजइन्द्रा जी से भी है दादा कि पुत्रवधू नारायण की पत्नी जो सन्तान उत्पन्न करने के बाद कुमारी कहलाई।

चतुर्थ परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

आज मेरे समक्ष **ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक पाठ्यक्रम** नामक पुस्तक है। इसमें सुन्दर लाल जिज्ञासु बन कर प्रश्न करता है और ब्रह्माकुमारी उत्तर देती है। इस पुस्तक की समीक्षा मैं भी प्रश्न उत्तर के रूप में ही पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। पहले तो इनका ईश्वर क्या है उसकी समीक्षा पुस्तक में लिखे सिद्धांतों के आधार पर करूंगा।

एक बगीचे की बेंच में एक श्वेत वस्त्र धारण किये हुए एक महिला बैठी है। पीत वस्त्र धारण किये हुए एक प्रौढ व्यक्ति भी आकर उसी बेंच में बैठ गया और श्वेत वस्त्र वाली से परिचय पूछा। महिला ने उत्तर दिया कि हम प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सदस्या हैं। हमारा नाम श्यामा ब्रह्माकुमारी है। अब अपना परिचय दीजिये। आगन्तुक ने कहा मैं प्रजापितामह विष्णु कुमार परमेश्वरीय ब्रह्माण्ड विद्यालय का सदस्य हूँ और मेरा नाम श्याम विष्णु कुमार है।

ब्रह्माकुमारी – मैंने तो इस संस्था का नाम पहली बार सुना है इसके संस्थापक कौन हैं ?

विष्णुकुमार– आप ने जरूर पहिली बार सुना होगा क्योंकि आप लोग कुएं से बाहर निकल कर तो कभी देखती नहीं,फिर तुम्हें संसार का हाल कैसे मालूम होगा। रही बात संस्थापक की तो जिस तरह से ब्रह्मा ने तुम्हारी संस्था की स्थापना की ठीक उसी तरह ब्रह्मा के पिता विष्णु ने इसकी स्थापना की है।

ब्रह्माकुमारी–विष्णु ने इस संस्था की स्थापना क्यों की ?

विष्णुकुमार– कुमारी जी हर कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। संसार का संतुलन बनाये रखने का दायित्व विष्णु पर है। जब विष्णु ने यह देखा कि मेरे द्वारा पैदा किया गया ब्रह्मा सृष्टि के सन्तुलन को बिगाडने के लिए केवल कुमारियों का ही उत्पादन कर रहा है जिससे संसार का संतुलन बिगडने का खतरा उत्पन्न हो गया है तब उन्होंने कुमारों का उत्पादन करना शुरू किया ताकि सन्तुलन बना रहे।

ब्रह्माकुमारी– देखो जी ब्रह्मा को जब ज्ञान देने के लिये संसार में आना

होता है तब वह किसी के गर्भ में रहकर कष्ट नहीं सहता वह तो किसी मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपना ज्ञान देता है। इसीलिए उसने दादा लेखराज के वृद्ध शरीर में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया उसी ज्ञान को दादा हम लोग को बतलाते हैं। अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे विष्णु ने किसके शरीर में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया।

विष्णुकुमार– कुमारी जी मेरे समझ में यह नहीं आता कि तुम्हारे ब्रह्मा को संसार में कोई जवान व्यक्ति क्यों नहीं मिला वह कौन सी मजबूरी थी कि बूढे शरीर में ही घुसना पडा।

ब्रह्माकुमारी– देखो जी जवान व्यक्ति तो बहुत थे पर हमारे दादा के बराबर अनुभवी नहीं थे इसलिए बूढे शरीर को चुना।

विष्णु कुमार– दादा लेखराज वेद दर्शन उपनिषद पुराण इतिहास में सर्वथा अनभिज्ञ थे और संस्कृत व्याकरण में भी शून्य थे। तप,त्याग,योग,विवेक से हीन थे। केवल दो बातों के ही अनुभवी थे एक है सन्तान पैदा करना और दूसरा है दूसरे लोगों के धन को छल–कपट से अपहरण कर धनी बनना।

ब्रह्माकुमारी– अब तुम बताओ कि तुम्हारे विष्णु ने किसके शरीर में प्रविष्ट होकर विष्णु कुमार ब्रह्माण्ड विद्यालय नाम की संस्था की स्थापना की है।

विष्णु कुमार– देखो जी विष्णु का अर्थ है व्यापक जो व्यापक होगा वही पालक होगा और जो व्यापक है उसके प्रविष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रविष्ट तो एक देशी ही होता है सर्व देशी नहीं। जो व्यापक होगा वह सब की मन: स्थिति को जानता होगा। इसलिए उसने तुम्हारे द्वारा फैलाये जा रहे पाखण्ड के उन्मूलन के लिए एक ग्रेजुयट नवयुवक जो रेलवे में कार्यरत था, उसका नाम सुधांशु था। उस सुधान्शु नाम के नवयुवक के हृदय में विष्णु ने ज्ञान का प्रकाश किया उस प्रकाश को प्राप्त कर वह नवयुवक संसार के कल्याण हेतु नौकरी एवं घर परिवार छोड कर सन्यास की दीक्षा लेकर वेदों का अंगों सहित अध्ययन कर स्वामी सुधानन्द सरस्वती बन कर पाखण्डों का उन्मूलन कर रहा है।

ब्रह्माकुमारी :– वगैर शरीर में प्रविष्ट हुये विष्णु ज्ञान दे ही नहीं सकता इसीलिए ब्रह्मा ने दादा के शरीर में प्रविष्ट होकर उन्हें सच्चा ज्ञान दिया था जिसका प्रचार हम लोग कर रही हैं।

विष्णु कुमार– कुमारी जी यदि दुर्जनतोषन्याय से हम आपकी बात मान लें तो प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि ब्रह्मा ने दादा के शरीर में किस मार्ग से प्रवेश किया था ? सामने वाले मार्ग से या पीछे वाले मार्ग से क्योंकि एक प्रवेश द्वार है तो दूसरा निकास द्वार है। पुरूष शरीर की रचना ही कुछ ऐसी विचित्र है कि जो भी प्रवेश द्वार से अन्दर जाता है वह बलात् कुछ घण्टों के बाहर निकाल दिया जाता है। क्योंकि पुरूष शरीर में एक ही आत्मा के रहने का स्थान है। नारी शरीर में जरूर यह विशेषता है कि उसके अन्दर दो आत्मायें कुछ दिनों तक रह सकती है परन्तु वह तीसरे मार्ग से ही प्रवेश करेगी और उसी मार्ग से निकलेगी। कुमारी जी यदि आप यह कहती कि दादा की पत्नी यशोदा के अन्दर ब्रह्मा ने प्रवेश किया तो किसी हद तक माना जा सकता था। परन्तु दादा के अन्दर प्रवेश की कल्पना तो शेखचिल्ली की कल्पना को भी मात देती है।

ब्रह्माकुमारी – तुम्हें अभी दिव्य दृष्टि प्राप्त नहीं हुई है इसलिये तुम ब्रह्मा को दादा के रूप में देख नहीं पाते हो।

विष्णु कुमार – कुमारी जी क्या आप यह बता सकती हैं कि जिस ब्रह्मा को मानती हो और जिसकी कुमारी है वह कौन है ?

ब्रह्माकुमारी – ब्रह्मा तो एक ही है जिसने सृष्टि की रचना की है जिसका वर्णन पुराणों में है हम उसी की कुमारी हैं।

विष्णु कुमार – तब तो यह मानना ही पडेगा कि दादा के अन्दर ब्रह्मा की ही आत्मा कार्य कर रही है। क्योंकि पुराणों में लिखा है कि विष्णु की नाभि कमल से पैदा होकर ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की उस रचना में सरस्वती नाम की लडकी भी पैदा की उसकी सुन्दरता को देखकर ब्रह्मा कामान्ध हो गया संभोग के लिए दौडा तब उसी के मारिचि आदि पुत्रों ने निन्दा की तब उसने अपने उस कलंकित शरीर का त्याग कर दिया। उसकी वासना से अतृप्त आत्मा भटकती रही तब उसने अपनी वासना को तृप्ति करने के लिए दादा के अन्दर प्रवेश किया है। मत्स्य पुराण के तीसरे अध्याय में एक कथा और आती है कि ब्रह्मा ने अपने अन्धे शरीर से सतरूपा नाम की कन्या पैदा की फिर उसी से संभोग कर मनु नाम का लडका पैदा किया और ब्रह्मवैबर्त पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा रति को देखकर स्खलित हो गये और रूद्र संहिता में

लिखा है कि ब्रह्मा जी अपनी पोती दक्ष की लडकी की शादी करा रहे थे तव सती के रूप को देखकर उनकी धोती खराव हो गई। यह है तुम्हारे उस ब्रह्मा का चरित्र जिसकी आत्मा लेखराज में प्रविष्ट है और तुम जिनकी कुमारी हो। यह दुनिया जानती है कि कुमारी का अर्थ अविवाहित है परन्तु आप लोग सन्तान भी पैदा करो और कुमारी भी यनी रहो कैसी विचित्र संस्कृति का सृजन कर रही हो। विवाहित होने पर भी अपने आप को कुमारी कहना यह संस्कृति रावण की थी क्योंकि रावण की वहन विधवा होने पर भी राम से कहती थी कि अभी तक मैं कुमारी हूँ। अगले परिच्छेद में इनकी सिद्धान्तों की समीक्षा करूंगा।

पञ्चम परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पुस्तक के पृष्ठ १९ पर लिखा है कि आत्मा को मन बुद्धि और संस्कारों से अलग मानना तो गोया आत्मा को चेतन न मानना अर्थात् उसे जड मानना होगा।

विष्णुकुमार – कुमारी जी कृपया यह बतलाइये कि मन और बुद्धि का उत्पादन कारण आत्मा है या प्रकृति।

ब्रह्माकुमारी – जो लोग मन को आत्मा से अलग मानते हैं वह उनकी भूल है इसलिए मन और बुद्धि का उपादान कारण आत्मा है।

विष्णु कुमार – क्या आत्मा भी प्रकृति की तरह विखण्डित होता है। जब मन और आत्मा एक ही है तो मन के विक्षिप्त होने से आत्मा भी विक्षिप्त हो जाता होगा और बुद्धिहीन होने से क्या आत्मा भी मूर्ख हो जाता है।

ब्रह्मा कुमारी –वास्तव में यह आत्मा ही पतित हो जाता है इसे अति पावन बनाना हैं।

विष्णु कुमार – बनने वाले से बनाने वाला विलग होता है तो पतित आत्मा को पावन कौन बनाता है। यदि यह कहो कि हम बनाते हैं तो तुम और आत्मा अलग–अलग हुए, यदि कहो कि संस्कार बनाते हैं तब प्रश्न उठता है कि संस्कार जड है या चेतन यदि चेतन है तो सादि है या अनादि। यदि जड है तो अपने आप कुछ कर ही नहीं सकता।

ब्रह्माकुमारी – मनुष्य को पतित से पावन, दु:खी से सुखी या नर से श्री नारायण बनाने के लिये परमपिता परमात्मा मनुष्यात्माओं की बुद्धि को ही दिव्य बनाते हैं। अत: परमपिता परमात्मा मनुष्यात्माओं को ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देने का कर्त्तव्य करते हैं।

विष्णु कुमार – आप के परमपिता परमात्मा शिव ने अभी तक कितने लोगों को पावन बनाया है और कितने लोगों की बुद्धि को दिव्य बनाया है तथा आपके शिव ने ईश्वरीय ज्ञान कहां से प्राप्त किया,जिसकी शिक्षा देने का कर्त्तव्य करते हैं शिव शब्द का अर्थ है कल्याण करना और कल्याण गुण है। गुण किसी गुणी का ही होता है। इसलिये शिव ईश्वर नहीं ईश्वर के गुण का

नाम है। ईश्वर ने संसार के कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में अपना ज्ञान सर्वप्रथम चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया उसी ज्ञान का नाम वेद है और दुनिया के पुस्तकालयों में वेद ही सबसे प्राचीन पुस्तक मानी जाती है। दादा लेखराज द्वारा कही अनर्गल बातों को जरा सी भी बुद्धि रखने वाला भी स्वीकार नहीं करेगा। आपने जो दादा लेखराज उर्फ खूबचन्द कृपलानी एवं लखीराम का नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा है यह आप लोगों के अक्ल के दिवालियेपन का जीता जागता सबूत है क्योंकि पिता पहिले होता है पुत्र बाद में तो क्या लेखराज से पहिले प्रजा नहीं थी ? यदि थी तो ये प्रजापिता कैसे कहलाये और जिसे ईश्वर के विषय में क ख ग भी नहीं मालूम हो वह ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम दे यह तो वैसा ही है जैसे कोई अन्धा अपना नाम नयनसुख रखे और लंगडा धावक नाम धरे। आप के द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम रखे जाने से भले ही लोगों को आश्चर्य हो पर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि मैं जानता हूँ कि लोग अपने डॉग को टाइगर कहने लगते हैं। जबकि कुत्ता कभी शेर नहीं हो सकता।

ब्रह्मा कुमारी– सुनो जी हमने ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम इसलिये दिया है कि तीन देवताओं को रचने के बाद परमात्मा शिव स्वयं परमधाम से अवतरित होकर एक साधारण मनुष्य के तन में प्रवेश करते हैं क्योंकि ज्ञान देने के लिए मुखेन्द्रिय की आवश्यकता होती है। परमात्मा के इस प्रकार के जन्म को ही दिव्य जन्म अथवा परकाया प्रवेश कहते हैं। परमात्मा प्रकृत मनुष्यों के सदृश्य जन्म नहीं लेते बल्कि प्रकृति को अपने वश में करके अलौकिक जन्म लेते हैं अर्थात् प्रवेश करते हैं। प्रतिदिन कुछ समय के लिए परमधाम से आकर उस साधारण वृद्ध मनुष्य के मुख द्वारा ज्ञान एवं सहज योग की शिक्षा दे जाते हैं।

विष्णु कुमार – आपका मानना है कि परमात्मा शिव निराकार है। इसलिये वह मुख रहित है कुछ कहने के लिए उसे दूसरे के मुख की जरूरत पडती है। जब उसे कहने के लिये दूसरे के मुख की जरूरत पडती है तो जब आप लोग प्रार्थना करती होंगी तब सुनने के लिये उसे दूसरे के कान की जरूरत पडती होगी और देखने के लिये किसी की आंख की जरूरत पडती होगी।

अब तुम्हीं बताओं कि तुम्हारा कल्पित शिव परमधाम में असहाय रहता होगा,क्योंकि वह न तो बोल सकता है न सुन सकता है न देख सकता है और न चल सकता है। जब वह कुछ कर ही नहीं सकता तब उसका नाम शिव कैसे हो सकता है जो क्रियाशील होगा वही कल्याण कर सकता है न कि निष्क्रिय। आपने लिखा कि हमारा शिव कुछ समय के लिये दादा लेखराज के शरीर में प्रवेश कर हमें ज्ञान देकर चला जाता है। इसे पर काया प्रवेश लिखा है। पर काया प्रवेश की कुछ दन्त कथायें है जिनमें मुर्दे में ही प्रवेश बताया गया है। तो क्या लेखराज प्रतिदिन मरते थे और भूतप्रेत मानने वाले अन्धविश्वासियों में यह प्रचलित है कि भूत काया में प्रवेश कर लिया या लग गया है। यदि लेखराज मरते नहीं थे तो उनके शरीर में प्रवेश करने वाला क्या कोई प्रेत था जिसका नाम शिव रख लिया है। लेखराज के शरीर में प्रवेश करने वाला कोई प्रेत ही था क्योंकि प्रेत मुर्दे में प्रवेश नहीं करता। यदि परमात्मा शिव ही प्रवेश करते थे तो लेखराज के मुर्दे में भी प्रवेश कर अपने ज्ञान देने के क्रम को चालू रखते क्योंकि तुम्हारे शिव को और दूसरा मुख तो मिल सकता नहीं इसलिये उसी मुख से काम चलाते रहते परमधाम में गूंगा बनकर रहत्ते से तो अच्छा था। पृष्ठ ८२ में लिखा कि परमात्मा पहले तो सूक्ष्म देवताओं को रचता है जिनका नाम ब्रह्मा,विष्णु,और शंकर है। पृष्ठ ७५ में लिखा कि परमात्मा तो निराकार है उसके कोई हाथ पांव आदि तो है नहीं और कोई भी साकार वस्तु बिना इन्द्रियों अथवा स्थूल साधनों के बिना बन ही नहीं सकती तब भला कैसे माना जाय कि निराकार परमात्मा ने साकार सृष्टि रची है। यह परमात्मा द्वारा रची हुई नहीं हो सकती क्योंकि परमात्मा की तो अपनी काया ही नहीं है। अत: आपको मालुम रहे कि यह सृष्टि अनादि है। पृष्ठ ८४ में लिखा कि आत्मा अविनाशी है उसके पैदा करने का सवाल ही नहीं उठता। आपने यह स्वीकार किया है कि परमात्मा शिव सृष्टि का रचयिता नहीं है। जब तुम्हारा शिव संसार का रचयिता नहीं है तब उसे संसार का ज्ञान भी नहीं होगा क्योंकि निर्मित वस्तु का यथार्थ ज्ञान निर्माता को ही होता है उपभोग करने वाले को नहीं। प्रकृति जड है जड में अपने आप बनने बिगडने की क्षमता नहीं होती और बिना गति के कोई पदार्थ निर्मित नहीं होता तथा हर गति के लिये कोई न कोई चेतन गति

दाता अवश्य होता है और हर गतिमान् पदार्थ के लिये कोई गतिहीन आधार भी चाहिये यह सारा ब्रह्माण्ड गतिमान् है ईश्वर सर्वव्यापक होने से गति हीन है। हर वस्तु में परमात्मा के व्यापक होने से उसे हर वस्तु का यथार्थ ज्ञान है। हर दृश्यमान पदार्थ परमाणुओं का संग्रह है। कृपया यह और बताइये कि तुम्हारे शिव ने ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की रचना वगैर हाथ के कैसे कर डाली और शरीर बनाने के लिए सामग्री कहां से प्राप्त की क्या हाथ किसी से उधार लिए या किसी के काया में प्रवेश किया फिर सूक्ष्म शरीर वाले को शंख चक्र गदा पद्म दे दिया तो सूक्ष्म विष्णु इन्हें कैसे धारण करता था। तुम्हारे शिव ने इन तीनों के शरीर जैसे-तैसे बना भी लिए तो इनमें आत्मा कहां से लाकर डाली जबकि आत्मा बनाई नहीं जा सकती तो क्या ये तुम्हारे तीनों देवता आत्मा रहित केवल जड मूर्ति हैं, स्पष्ट करें।

षष्ठ परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पुस्तक के पृष्ठ ५६ में ब्रह्माकुमारी पूछती है कि भला बतलाइये कि अगर परमात्मा सर्वव्यापक है तो शरीर से आत्मा निकल जाने पर परमात्मा तो रहता ही है। तब उस शरीर में चेतना क्यों नहीं प्रतीत होती और परमात्मा की चेतनता इतनी कमजोर है कि आत्मा निकल जाने पर चेतना नहीं भासती।

विष्णुकुमार– मुझे तो तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है। जितना प्रयत्न तुम लोगों के ठगने में करती हो यदि यही प्रयत्न विद्या प्राप्ति में करती तो जीवन सफल हो जाता। शरीर से जीव निकलता है और वही प्रवेश करता है। आत्मा नहीं-- आत्मा शब्द का अर्थ है व्यापक जब तक जीव शरीर में रहता है तब तक उसकी संज्ञा जीवात्मा होती है जब शरीर त्याग देता है तब केवल जीव संज्ञा रहती है। आत्मा तो उपाधि है जैसे राष्ट्रपति एक पद है उपाधि है जो भी उस कुर्सी में बैठेगा जब तक बैठा रहेगा उसकी संज्ञा राष्ट्रपति की रहेगी इसी तरह जीव जब तक शरीर में रहता है तब तक वह जीवात्मा कहलाता है। ईश्वर सब में व्यापक होने से ही परम विशेष लगता है। आत्मा शब्द का प्रयोग ईश्वर और जीव दोनों के लिए होता है। व्यापक अर्थ होने के कारण जीव एकदेशीय आत्मा है और ईश्वर सर्वदेशीय आत्मा है। जीव के एकदेशीय होने से ही उसमें तीन अवस्थायें होती हैं। जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति ईश्वर सर्वदेशीय होने से उन अवस्थाओं से रहित है।

जीव स्वाभाविक चेतन होते हुए भी अवस्थाओं से बंधा हुआ है। चेतनता तो कमजोर जीवात्मा की होती है,क्योंकि वह बेहोश एवं सुषुप्ति में अपनी चेतनता खो देता है। ईश्वर में हमेशा एक सी चेतनता रहती है। यह संसार परमाणुओं का संग्रह है परमाणु जड है अपने आप न तो मिल सकते हैं और न बिछुड सकते हैं। इनके संगठित और विघटित होने में सर्वव्यापक ईश्वर की चेतना ही कार्य करती है। जीव जब शरीर छोड देता है तब व्यापक परमात्मा की चेतना ही शरीर को विघटित करती है।

ब्रह्माकुमारी– पृष्ठ ५७ मनुष्यों के मत पर आधारित शास्त्रों में तो भले ही

यह कहा गया है कि परमात्मा सर्वव्यापक है परन्तु शिरोमणि शास्त्र श्रीमद् भगवत् गीता से तो स्पष्ट है कि परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है। गीताशास्त्र तो स्वयं भगवान् ही के महावाक्यों का संग्रह है। अत: भगवान् अपने स्वरूप के विषय में स्वयं जो कुछ कहते हैं वही मानना चाहिए। भगवान् कहते हैं कि हे वत्स मेरा जो स्वरूप है वह तुम मेरे द्वारा जानों। अगर मनुष्य भगवान् का वास्तविक स्वरूप जानते होते तो वेदों, शास्त्रों के होते हुए भी भगवान् को अवतरित क्यों होना पडता और वह ऐसा क्यों कहते कि यह योग और ज्ञान लुप्त हो गया है इसलिए अब फिर सुनाने आया हूँ। इससे स्पष्ट है कि वेद उपनिषद् आदि होने पर भी भगवान् का वास्तविक ज्ञान प्राय: लुप्त था। गीता के अवतारवाद के सिद्धान्त से स्पष्ट है कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। वास्तव में गीता में यह भी महावाक्य है कि इस सृष्टि के व्यक्त तत्व के पार जो अव्यक्त धाम है जहां सूर्य और तारागण का प्रकाश नहीं पहुंचता वही मेरा परमधाम है। भगवान् ने यह भी कहा है कि मैं प्रवेश होने के योग्य हूँ। मैं दिव्य जन्म लेता हूँ।

विष्णुकुमार– मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोगों ने स्वप्न में भी गीता नहीं देखी केवल दिवा स्वप्न ही देखती हो। गीता को वगैर पढे ही शिरोमणि शास्त्र लिख दिया। क्या आप यह बता सकती हैं कि श्रीमद्भगवत् गीता का वह कौन सा श्लोक है जिसमें यह स्पष्ट लिखा हो कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। तुमने लिखा है कि गीता स्वयं भगवान् के महावाक्यों का संग्रह है, और तुम्हारा मानना है कि भगवान् निराकार है उसे बोलने के लिये किसी और के मुख की जरूरत पडती है। तो ये महावाक्य किसके मुख से बोले गये। दुनिया यह जानती है कि गीता कृष्ण अर्जुन संवाद के रूप में उद्धृत किया गया है। तो क्या तुम्हारा परमात्मा कृष्ण के शरीर में प्रवेश कर महावाक्य बोला और चला गया और तुम्हारा यह भी मानना है कि परमात्मा बूढे शरीर में ही प्रवेश करता है तो क्या उस वक्त कृष्ण बूढे हो गये थे। धन्य है अक्ल के दिवालियों तुम्हारी बुद्धि तो अजायबघर में रखने लायक है। आगे लिखा कि वेद शास्त्रों के होते हुए भी भगवान् को अवतरित क्यों होना पडता है। वेदशास्त्रों में ईश्वर के अवतार लेने का कहीं भी उल्लेख नहीं है। तुम लोगों ने विद्या तो पढी नहीं इसलिए तुम्हें सब धान बाइस

पसेरी लगता है। ईश्वर कभी भगवान् नहीं हो सकता और भगवान् कभी ईश्वर नहीं हो सकता भगवान् तो उपाधि है अच्छे कर्म करने वाले छः गुणों से युक्त व्यक्ति को भगवान् की उपाधि मिलती है। उपाधि कोई व्यक्ति नहीं है इसलिए भगवान् का अवतार लेने का प्रश्न ही नहीं उठता ,अवतार तो जीव लेता है। वेद तो ईश्वर का ज्ञान है वह कभी भी लुप्त नहीं होता। तुम्हारे जैसे विद्याहीनों के लिये तो लुप्त है ही। जैसे अन्धे के लिये सूर्य लुप्त रहता है। गीता का कृष्ण अर्जुन संवाद काल्पनिक है फिर भी उसमें अवतार वाद का कोई सिद्धान्त नहीं है और ईश्वर को सर्वव्यापी ही माना गया है। अव्यक्त धाम जहां सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचता वही मेरा धाम है रहने की जगह मकानादि को धाम कहते हैं। जो अव्यक्त होगा वह धाम हो ही नहीं सकता। धाम तो हमेशा व्यक्त ही होते हैं। जहां सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुंच सकता है वहां तुम और तुम्हारे दादा लेखराज कैसे पहुंच गये। तब तो यही कहना पडेगा कि अन्धे को अन्धेरे में दूर की सूझी।

ब्रह्माकुमारी-(पृष्ठ ५९) हमने ब्रह्मलोक का भी कई बार दिव्य साक्षात्कार किया है।

विष्णुकुमार- आश्चर्य है कि तुम पहले तो यही कहती हो कि सूर्य का प्रकाश भी वहां नहीं पहुंच सकता है। तब उस अव्यक्त स्थान को तुमने कई बार कैसे देखा इस प्रकार से झूठ बोलने में तो लज्जा को भी लज्जा आयेगी परन्तु तुम लोगों को नहीं आती। झूठ बोलने वाला दुनिया का हर कुकर्म करके भी यह कह सकता है कि मैं तो सदाचारी हूँ।

ब्रह्माकुमारी- (पृष्ठ ६०) आप सोचेंगे तो मानेंगे कि परमात्मा को सर्वव्यापक मानना तो गोया परमपिता परमात्मा का अपमान करना है परमात्मा को सर्वव्यापक मानने का अर्थ तो उसे सर्प, बिच्छू, मगरमच्छ, कुत्ते, सूअर, उल्लू आदि सभी निकृष्ट योनियों में भी मानना है। अपने ऊंचे से ऊंचे पिता के बारे में ऐसा कहना तो गोया मूर्खता है। जिन पत्थरों को मनुष्य पांव के नीचे रौंदकर चलता है जिन धूलिकणों को मनुष्य झाडकर या झाडु से इकट्ठा करके बाहर निकाल फेंकता है जिस विष्टा से मनुष्य घृणा करता है जिस बावले कुत्ते से मनुष्य जान बचाकर निकल जाता है और जिस विषैले सर्प को मनुष्य स्वप्न में भी देखना नहीं चाहता उसमें भी अपने परमपिता को

व्यापक मानना तो गोया बुद्धि के दिवालियापन की निशानी है।

विष्णुकुमार– परमात्मा को सर्वव्यापक मानना उसका अपमान करना नहीं बल्कि उसकी महानता को स्वीकारना है। परमात्मा को एकदेशीय किसी विशेष स्थान में निकम्मा हो कर बैठा मानना उसका सबसे बडा अपमान है। तुमने लिखा है कि निकृष्ट योनियों में व्यापक मानना मूर्खता है। मूर्खता तो उसे एकदेशीय मानने में है। सोचो जरा दुनियां में कोई भी वस्तु अपने आप नहीं बनती उसका कोई न कोई बनाने वाला अवश्य होता है। एक अण्डे को देखिये वह चारों तरफ से बन्द है उसके अन्दर एक तरल पदार्थ है। उस तरल पदार्थ से ही मांस,हड्डी और शरीर के बारीक से भी बारीक यन्त्र यथा स्थान जुडे हुए होते हैं। यह कौन कहता है बिना कर्त्ता के कोई कार्य होता नहीं है। अण्डे के भीतर सर्वव्यापक ईश्वर के सिवाय और कौन कर सकता है। मां के अन्दर (शिशु) का निर्माण कौन करता है क्या तुम्हारा वह एकदेशीय शिव जो बोल नहीं सकता,देख सुन नहीं सकता,चल फिर नहीं सकता। यदि कहो कि अपने आप परमाणुओं के संग्रह से बनता और बढता जाता है। यदि ऐसा होता है तो शरीर को बढते ही रहना चाहिये बुढापा कभी नहीं आना चाहिए। यदि कहो कि हमारे अन्दर की आत्मा की संरचना करती है परन्तु कोई आत्मा अन्धी,लंगडी,गूंगी संरचना नहीं करेगी और न वृद्ध होना चाहेगी। ये सारे कार्य ईश्वर की व्यापकता से ही होते हैं। तुम्हारा सबसे बडा आक्षेप यह है कि मल में व्यापक कैसे माने। सोचो जरा मल रहता कहां है यह तुम्हारे अंदर ही रहता है जब तक यह तुम्हारे अंदर था और तुम उसमें व्यापक थी तब तक वह पवित्र था इसे पवित्र मानकर साथ में लिए फिरती रही जब उसने तुम्हारा साथ छोड दिया तब अपवित्र हो गया। ठीक इसी तरह हर कण में ईश्वर है और हर कण ईश्वर में है। इसी व्यापकता के कारण ही सूअर का जीवात्मा उसे बडे प्रेम से खाता है और वह जो मल करता है उसे किसान बडे प्रेम से अपने खेतों में डालता है और उस खेत में पैदा हुई साग–सब्जी तुम बडे प्रेम से खाते हो। सुगन्ध,दुर्गन्ध स्थूल भूतों में है। ईश्वर इन भूतों से अति सूक्ष्म है अत: उसे सुगन्ध–दुर्गन्ध आदि का अनुभव ही नहीं होता।

सप्तम परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पुस्तक के पृष्ठ ९० पर लिखा कि परमपिता परमात्मा शिव ने भी समझाया है कि आदि देवी-देवता धर्म के क्षीण होने पर जब इब्राहिम द्वारा इस्लाम धर्म स्थापित हुआ और तब से अब तक कलियुग के अंत तक २५०० वर्ष व्यतीत हुए हैं और ये २५०० वर्ष दु:ख के थे। इससे पहले २५०० वर्ष सुख के थे। इस प्रकार यह सुख-दु:ख का खेल ५००० वर्ष का है। यह मनुष्य सृष्टि तो अनादि है परन्तु इसमें यह खेल ५००० वर्ष में एक बार पूरा होकर फिर पुनरावृत्त होता है।

समीक्षा- दादा लेखराज कृपलानी जिन्हें ये लोग परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं तो विद्या से हीन थे ही, उन्हें न तो इतिहास का ज्ञान था और न ही धर्म का। महिलाओं की अज्ञानता का लाभ उठाते हुए जो मन में आया बक दिया। देवी-देवता नाम का कोई धर्म सृष्टि में न हुआ है और न है। यह अनर्गल कल्पना है। इन्होंने लिखा कि इब्राहिम ने इस्लाम धर्म की स्थापना की। यह इनके बुद्धि के दिवालिये पन का जीता जागता सबूत है। दुनिया जानती है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक मोहम्मद साहब थे जो ईसवीं की छठी सदी में हुए थे। इन्होंने लिखा कि इब्राहिम को इस्लाम धर्म की स्थापना किये आज से २५०० वर्ष हुए। मुझे तो आश्चर्य यह है कि इनकी इस प्रकार की कोरी गप्पों को इस संस्था के अनुयायी आँख मूंद कर कैसे स्वीकार कर लेते हैं। ईसा से पूर्व दाऊद नाम के नबी थे जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे। दाऊद से करीब छ: सौ वर्ष पूर्व मूसा थे और मूसा से पूर्व अब्राहम जो बाद में इब्राहिम कहलाये जिन्हें हुए करीब ४००० वर्ष हुए।

इन्होंने लिखा कि दुनिया में २५०० वर्ष तक दु:ख रहता है और २५०० वर्ष तक सुख रहता है। इस तरह से असम्भव बुद्धि के विपरीत बातें तो कोई पढा लिखा व्यक्ति नहीं कह सकता। ऐसी बातें तो केवल स्वार्थी ही कह सकते हैं। क्योंकि स्वार्थी दोषं न पश्यति। स्वार्थी को दोष नहीं दिखते उसे तो केवल अपना ही स्वार्थ दिखता है। आगे लिखा कि यह सृष्टि तो अनादि है। इस संस्था के लोगों को सामान्य ज्ञान भी नहीं है। जो वस्तु

बनती है वह एक न एक दिन बिगडती है वह वह बनी हुई वस्तु अनादि नहीं होती इस सृष्टि को बने हुए अभी तक १९८६७७३०९८ वर्ष हुए यह सृष्टि अभी २३३३२२६९०२ वर्ष तक रहेगी इसके बाद प्रलय होगा। इन्होंने लिखा कि यह खेल और ५००० वर्ष में एक बार पूरा होकर फिर पुनरावृत्ति होगा। इन्होंने ५००० वर्ष के बाद पुनरावृत्ति इसलिए लिखी कि श्री कृष्ण को हुए ५२०० वर्ष हो गये हैं। दादा लेखराज यह सिद्ध करना चाहते हैं कि ५००० वर्ष पूर्व का कृष्ण मैं ही हूँ जिस तरह से कृष्ण रासलीला करते थे वैसी मैं कर रहा हूँ।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ९४ में लिखा कि कल्प की आयु तथा स्थापना विनाश और पालन का रहस्य तो उस कर्त्तव्य को करने वाला तथा जन्म मरण से न्यारा परमात्मा स्वयं ही बता सकता है। कोई मनुष्य इसका सत्यज्ञान तो दे नहीं सकता। अत: हम तो परमपिता परमात्मा से प्राप्त ज्ञान ही आप को स्पष्ट कर रहे हैं कि कल्प की आयु ५००० वर्ष है।

समीक्षा– यह सत्य है कि सृष्टि की रचना काल और विनाश काल केवल परमात्मा ही जानता था। इसलिए उसने अपने इस ज्ञान की जानकारी को मानव सृष्टि के आदि में यह ज्ञान चार ऋषियों को दिया। जो वेद के नाम से जाना जाता है। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद और अंगिरा ऋषि को अथर्व वेद का ज्ञान दिया इस ज्ञान को दिये हुए १९६०८५३०९८ वर्ष व्यतीत हो गये हैं सृष्टि की आयु एक कल्प होती है जिसकी आयु चार अरब बत्तीस करोड वर्ष होती है यह गणित निमेष, पल, घडी, प्रहरदिन, पक्ष, मास, अयन, वर्ष, युग, चतुर युग, मन्वन्तर और कल्प फिर प्रलय इसे ही ब्राह्म दिन कहते है। जब से मानव सृष्टि हुई है तभी से एक–एक दिन बढाते हुए चले आ रहे हैं। मुझे तो आश्चर्य यह है कि जिसे साधारण सा भी ज्ञान न हो ऐसे व्यक्ति लेखराज को परमात्मा कहना और उसकी कही हुई वे सिर–पैर की गप्पों को मानना इससे भी ज्यादा विद्या की अवमानना और क्या हो सकती है।

इसी पुस्तक के पृष्ठ १०१ में लिखा कि आज से लगभग २५०० वर्ष पहले इब्राहिम ने इस्लाम धर्म स्थापित किया। लगभग २००० वर्ष पूर्व ईसा ने ईसाई धर्म स्थापित किया १५०० वर्ष पूर्व शंकराचार्य ने कई सन्यास

सम्प्रदाय स्थापित किये और कोई १४०० वर्ष पूर्व मुहम्मद ने मुसलमान धर्म स्थापित किया।

समीक्षा- इब्राहिम को हुए करीब ४००० वर्ष हुए इन्होंने २५०० वर्ष लिखा ईसा को हुए १९९७ वर्ष हुए इन्होंने २००० वर्ष से पूर्व लिखा शंकराचार्य को हुए करीब २४०० वर्ष हुए इन्होंने १५०० वर्ष लिखा है। मुसलमान जाति का नाम है मुसलमानों का धर्म इस्लाम है इन्होंने मुसलमान और इस्लाम को अलग-अलग धर्म लिखा। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस संस्था के लोगों ने सत्य न बोलने की कसम खा रखी है। तुलसीदास जी ने लिखा है- **नहिं असत्य सम पातक दुजा**। असत्य के समान और कोई पाप नहीं है। असत्य बोलने वाला दुनिया में ऐसा कौन सा पाप है जो वह न कर सकता है।

इसी पुस्तक के पृष्ठ १०२ में लिखा कि इस्लाम धर्म ,बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म आदि जो भी हुए हैं वह द्वापर युग में हुए हैं।

समीक्षा- '' एकां लज्जां परित्यज्य विजयी सर्वत्र भवेत् '' की कहावत को चरितार्थ करते हुए यह लिख दिया कि इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, द्वापर युग में हुए हैं। पुरातत्व विभाग की खुदाई में बौद्ध कालीन जो शिला लेख प्राप्त हुए हैं उनमें कलि संवत् और युधिष्टरी संवत् अंकित मिलते हैं इससे सिद्ध है कि बुद्ध ईसा-इस्लाम द्वापर युग के हैं ऐसी बात तो पागल ही कह सकता है बुद्धि वाला नहीं। श्री कृष्ण के मृत्यु के १० वर्ष बाद से कलियुग लगा है जिसके ५०९८ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और ४२६९०२ वर्ष अभी बाकी हैं।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ११२ में लिखा कि शास्त्रवादी लोग तो १० चतुर्युग का एक कल्प मानते हैं परन्तु परमपिता परमात्मा शिव ने समझाया कि एक चतुर्युग और संगम युग मिलाकर कल्प होता है।

समीक्षा- मुझे तो आश्चर्य यह है कि इन लोगों को झूठ बोलने में लज्जा क्यों नहीं आती, इन्होंने शास्त्रों को स्वप्न में भी देखा नहीं और लिख दिया कि शास्त्रवादी १० चतुर्युग का कल्प मानते हैं। यदि इनमें जरा भी मनुष्यता है तो बतायें कि कौन से शास्त्र और कौन शास्त्रवादी ऐसा कहता है। तुम जिस लेखराज कृपलानी को परमात्मा शिव कहती हो वे तो

वेदशास्त्रों और संस्कृत साहित्य से सर्वथा अनभिज्ञ थे और न कभी विद्वानों का संग किया उन्हें क्या पता कि कल्प क्या होता है जो मन में आया कह दिया। संगम का अर्थ है जहां दो धारायें आपस में मिलती हैं। यदि तुम यह कहो कि कलियुग के अंत में सतयुग के प्रारम्भ को हम लोग संगम युग कहते हैं। ऐसा कहना तुम्हारी विवेकहीनता को ही सिद्ध करता है। दो युगों के मिलन के समय को संधिकाल कहते हैं युग नहीं और ये संधिकाल एक नहीं चार होते हैं सतयुग त्रेता संधि एक, त्रेता द्वापर संधि दो, द्वापर कलियुग संधि तीन और कलियुग सतयुग संधि चार हर चतुर्युग में चार संधि काल होते हैं। परन्तु ये संधि या औपचारिक मात्र ही होते हैं जैसे दिन-रात की संधियों को अलग नहीं गिना जाता है। उसी तरह युग की संधियों को अलग युग के नाम से नहीं गिना जा सकता।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ११० में लिखा है कि आत्मा तो क्या स्वयं परमात्मा भी धर्म ग्लानि के समय इस सृष्टि में आकर जन्म लेते हैं।

समीक्षा- तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है-

बातुल भूत विवश मतवारे ।
ये नहीं बोलहिं वचन विचारे ।।

बातुल (जो ज्यादा बकवास करता हो) भूत (जो उन्माद रोग से ग्रसित हो) विवश (जो किसी के दबाव में हो) मतवारे (जो मादक द्रव्य का सेवन किया हो) ये चार प्रकार के लोग विचारपूर्वक बात नहीं कहते मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस संस्था के लोग इन गुणों से परिपूर्ण हैं। पृष्ठ ९१ में लिखा कि परमात्मा जन्म मरण से न्यारा है। और यहां लिखते हैं कि परमात्मा इस सृष्टि में आकर जन्म लेते हैं। इस प्रकार की परस्पर विरोधी बातें तो उन्मादी, मतवारे या पागल ही करते हैं।

अष्टम परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पुस्तक के पृष्ठ ६२ पर ब्रह्माकुमारी कहती है कि भारत वर्ष, एक ओर तो शिव का दिव्य जन्मोत्सव शिवरात्री मनाते हैं और दूसरी ओर कहते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापक है।

विष्णुकुमार– कुमारी जी भारत का मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी शिवरात्री को शिव का जन्मदिन नहीं मानता बल्कि विवाहोत्सव जरूर मानता है और न शिव को सर्वव्यापक कहते हैं। शिव को तो पत्नी बच्चों वाला कैलासवासी ही मानते हैं। फिर तुम्हें यह दिवा स्वप्न कैसे आ गया कि शिवरात्री को भारत के लोग शिव का जन्मदिन मानते हैं।

ब्रह्माकुमारी– हम लोग परमपिता शिव का दिव्य जन्म मानते हैं। माता के गर्भ से नहीं। लोक में भी दो प्रकार का जन्म होता है एक लौकिक माता-पिता से दूसरा जन्म जैसे अज्ञान से ज्ञान प्राप्त होना बुरी आदतों को छोडकर अच्छी आदत में चलना यह दिव्य जन्म कहलाता है।

विष्णुकुमार– तुमने यह स्वीकारा है कि परमपिता शिव दिव्य जन्म लेता है और दिव्य जन्म कि परिभाषा यह की है कि अज्ञान से ज्ञान प्राप्त करना तथा बुरी आदतों को छोडना कृपया यह और बतलाइये कि तुम्हारे परमपिता शिव में कौन-क़ौन सी बुरी आदतें थी जिसको उसने छोड दिया। उस अज्ञानी शिव ने किससे ज्ञान प्राप्त कर दिव्य जन्म लिया जिसे तुम लोग मरजीवा जन्म कहती हो। अब यह और बतलाइये कि तुम्हारे शिव का मरजीवा जन्म कब हुआ और कहां हुआ। यदि नहीं हुआ तो शिवरात्री को शिव का जन्मदिन क्यों मानती है।

ब्रह्माकुमारी– शिवलिंग परमात्मा की प्रतिमा है और शंकर की अपनी प्रतिमा शरीर वाली है। पृष्ठ ८२

विष्णुकुमार– प्रतिमा तो शरीर की ही होती है या फिर शरीर के किसी भी अंग की जैसे विष्णु के शरीर के एक अंग पैरों (चरणों)की भी प्रतिमा मंदिरों में पाई जाती है। भक्त लोग दोनों की पूजा करते हैं,कुछ लोग शरीर की प्रतिमा की पूजा करते हैं और कुछ लोग चरणकमल की प्रतिमा को पूजते

हैं। ठीक उसी तरह कुछ लोग शिव के पत्नी सहित शरीर की प्रतीमा को पूजते हैं और कुछ लोग उनकी मूत्र इन्द्रियां (लिंग) की प्रतिमा की पूजा करते हैं। शरीर की पूजा करने वाले शैव कहलाते हैं और लिंग की पूजा करने वाले लिंगायत कहलाते हैं। तुमने स्वयं स्वीकारा है कि शिवलिंग ही हमारे परमात्मा की प्रतिमा है। इससे तो यही सिद्ध है कि तुम लोग लिंग उपासक हो। मन्दिरों में शिव लिंग की प्रतिमा निम्नप्रकार से पाई जाती है कोई छोटी कोई बडी और कोई मोटी तो कोई पतली इनमें से आप लोग चारों की उपासना करती हो या किसी एक की उत्तर दें।

ब्रह्माकुमारी– सुनो जी जिस मनुष्य के तन में यह प्रवेश करते हैं उसको वह प्रजापिता ब्रह्माकुमारी नाम देते हैं। पृष्ठ ८४

विष्णुकुमार– कुमारी जी यह बतलाइये कि आपके उस लिंग स्वरूप परमात्मा ने किसके अंदर प्रवेश किया था।

ब्रह्माकुमारी– हमारे वृद्ध दादा लेखराज के अन्दर प्रवेश किया था।

विष्णुकुमार– कृपया यह और बतला दीजिये कि आप के उस लिंग स्वरूप परमात्मा ने दादा लेखराज के शरीर में किस मार्ग से प्रवेश किया था। कान से, नाक से, मुख से, गुदा से, या फिर शरीर को चीर कर घुसा था।

ब्रह्माकुमारी–परमात्मा ने हमारे दादा लेखराज के मुख से प्रवेश किया था।

विष्णुकुमार– तुम्हारे दादा को यह पता कैसे लगा कि परमात्मा मेरे मुख से अन्दर जा रहा है। क्या उसमें कोई स्वाद था खट्टा–मीठा नमकीनादि। फिर मुख से जब उस वस्तु ने अन्दर प्रवेश किया तब दादा अंकेले थे या और कोई था। इस घटना का क्या कोई चश्मदीद गवाह है।

ब्रह्माकुमारी– कुमार जी जरा बुद्धि का प्रयोग करो। परमात्मा कोई पदार्थ थोडे ही है जो उसमें स्वाद होगा वह तो वायु के समान अन्दर चला गया वायु में क्या स्वाद रहता है। दादा जब प्रवचन करने बैठते थे तब ही परमात्मा उनके अन्दर प्रवेश करता था। रही चश्मदीद गवाह की बात तो दादा स्वयं कह्ते थे कि जो बातें मैंने बताई है वह परमात्मा की कही हुई है मेरी नहीं।

विष्णुकुमार– कुमारी जी बुद्धि का दुरूपयोग तो आप कर रहीं हैं। वायु तो निराकार है और आपका परमात्मा तो लिंग स्वरूप साकार है। साकार वस्तु का निराकार में तदाकार होना संभव नहीं है आप का कथन है कि दादा

प्रवचन करने बैठते थे तभी प्रवेश करता था और फिर चला जाता था। तो क्या आपके दादा किसी से सन्देश भेजते थे कि अब मैं प्रवचन करूंगा तुम मेरे अन्दर प्रवेश हो जाओ क्योंकि आपका परमात्मा तो सर्वव्यापक है नहीं ब्रह्मलोक में रहता है तो उसे यह सूचना कौन देता था और तुम जो यह कहती हो कि परमात्मा जिसके तन में प्रवेश करता है उसका नाम प्रजापिता ब्रह्मा देता है। कृपया यह और बतला दीजिये कि जब से सृष्टि बनी है तब से आज तक तुम्हारे परमात्मा ने कितने लोगों के तन में प्रवेश कर उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, वर्त्तमान सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न हुए १९६०८५३०९८ वर्ष हो गये हैं इतने वर्ष बीत जाने पर तुम्हारे परमपिता शिव को किसी भी व्यक्ति ने अपने अन्दर घुसने क्यों नहीं दिया क्या कारण बता सकती हो। तुम्हारी इन गप्पों को वही मानेंगे जो अक्ल के दिवालिये हो चुके हैं। ब्रह्मा एक पद है और यह पद उन्हें प्राप्त होता है जो चारों वेदों के ज्ञाता होते हैं। वेद विहीन लेखराज को ब्रह्मा कहना गुबरीले को हाथी कहने के समान है।

ब्रह्माकुमारी–सतयुग और त्रेतायुग में तो सत्य धर्म स्थित होता ही है। अतः इन दो युगों में परमात्मा के आने की क्या आवश्यकता है। धर्म की हानि तो द्वापर युग से शुरू होती है। तब यदि परमात्मा अवतरित होकर धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश कराये तो द्वापर युग के बाद तो सतयुग आना चाहिये परन्तु वास्तव में तो द्वापर युग के बाद तो कलियुग आता है। तो स्पष्ट है कि कलियुग के अन्त में जबकि धर्म की अत्यन्त हानि होती है और मनुष्य मात्र आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हैं तभी परमात्मा शिव अवतरित होते हैं। पृष्ठ ८६

विष्णुकुमार– कुमारी जी ! क्या आप लोगों को अक्ल से कोई दुश्मनी है जो उसकी इतनी ज्यादा अवहेलना कर रही हो। अक्ल ही तो मनुष्यता की पहिचान है। यदि आप लोगों ने इस पहिचान को ही नष्ट कर दिया है तो फिर तुम्हें क्या कहा जाय मनुष्य या पशु। तुम लोग युगों की आयु १२०० वर्ष मानती हो या यह भी कहती हो कि वर्त्तमान समय कलियुग का अन्तिम समय है। तुम्हारे कथनानुसार तो कलियुग इस्वीं सन् की आठवीं सदी से लगा। तब तो मुहम्मद, ईसा मसीही, विक्रमादित्य आदि द्वापर युग के हुए

आदि शंकराचार्य महावीर गौतम बुद्धि त्रेता युग के हुए।

और इब्राहिम जरदुस्तादि सतयुग में हुये। क्या त्रेता और सतयुग में उत्पन्न शंकराचार्य महावीर ,गौतम बुद्ध, इब्राहिम ,जरदुस्तादि के समय में केवल सत्य धर्म ही था चोरी व्यभिचार मांसाहार छल कपटादि कृत्य नहीं होते थे। कृष्ण कौरव पाण्डव आदि क्या हुये ही नहीं है यदि हुए हैं तो तुम्हारे हिसाब से किस-किस युग में हुए हैं स्पष्ट करो और तुम जिस गीता को यदा-कदा उद्धृत करती हो वह कब और किसने कही। तुमने यह स्वीकारा है कि धर्म की हानि द्वापर युग से ही शुरू हो गई थी और यह भी कहती हो कि हमारे परमात्मा शिव ने अधर्म को इसलिये नहीं रोका कि धर्म को अभी रोक देने से सतयुग लग जायेगा। कृपया यह और बतलाओ कि सतयुग लग जाने से तुम्हारे परमात्मा का कौन सा नुकसान हो जाता और अधर्म के रहने से उसे कौन सा लाभ हो रहा है स्पष्ट करो। तुमने लिखा है कि कलियुग के अन्त में जब कि धर्म की अत्यंत हानि होती है -और मनुष्य मात्र आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हैं तभी परमपिता शिव अवतरित होते हैं । तुम्हारे इस कथन से तो यही सिद्ध होता है कि जब तक लेखराज द्वारा निर्मित ओम मण्डली नहीं बनी थी तब तक धर्म की अत्यंत हानि नहीं हुई जैसे ही ओम मंण्डली बनी धर्म की अत्यंत हानि होनी शुरू हुई। क्योंकि ये लोगों को आसुरी सम्प्रदाय में लालच देकर सम्मिलित करने लगे और जिसे बहन कहते हैं उसी से सन्तान भी उत्पन्न करते हैं इस आसुरी क्रियाकलाप को देख कर लोगों ने धर्म की अत्यंत हानि की अनुभूति कर ओम मण्डली के कार्यालय में आग लगा दी और न्यायालय का दरवाजा खटखटाया परिणाम यह हुआ कि मण्डली वालों को हैदराबाद छोड कर करांची में शरण लेनी पडी। वहां से भी जब भागकर भारत आये तब तुम्हारे शिव ने लेखराज के तन में प्रवेश कर उसे समझाने का प्रयत्न किया जब वह नहीं सुधरा तब शिव ने उसे इस दुनिया से ही भगा दिया।

नवम परिच्छेद

असलियत छिप सकती नहीं, झूठे वसुलों से ।
खुशबू आ सकती नहीं, कागज के फूलों से ।।

प्रिय पाठकों,

आज मेरे समक्ष प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय रांची कार्यालय से प्रकाशित गीता ज्ञानदाता त्रिमूर्ति शिवजयंती नामक पम्पलेट है। इसे पढकर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह पम्पलेट मेन्टल हॉस्पिटल (पागल खाने) में प्रवेश प्राप्त किये हुए लोगों द्वारा लिखा गया हो। अब मैं विज्ञ पाठकों के समक्ष पम्पलेट में उद्धृत की गई सामग्री को प्रस्तुत कर रहा हूँ ,जिसे देखकर पाठक भी इस निष्कर्ष पर पहुंचेगे कि ये या तो अभी भरती है या फिर वहां से भाग आये हैं।

पम्पलेट में उद्धृत सामग्री– जिन्होंने अब से ६१ वर्ष पूर्ण साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में पुन: अवतरित होकर दिव्य एवं अलौकिक जन्म लिया था और जो कल्प (५००० वर्ष) पूर्व समान अविनाशी ज्ञान और योग सिखाकर सम्पूर्ण पवित्रता,सम्पूर्ण सुख एवं सम्पूर्ण शान्ति का वरदान ब्रह्मा,विष्णु, शंकर द्वारा दिला रहे हैं। उन्हीं गीता ज्ञानदाता निराकार परमात्मा त्रिमूर्ति ज्योति स्वरूप शिव के दिव्य जन्मोत्सव ६२ वीं शिव जयंती पर बारम्बार बधाई आप को हार्दिक निमंत्रण है कि पीछे लिखे हुए कार्यक्रम में पधारकर अविनाशी लाभ उठायें।

समीक्षा– इनका यह कथन है कि शिव का जन्म केवल ६२ वर्ष ही हुए हैं और उसी दिन से शिवरात्री मनायी जाती है। यह इनके पागलपन का जीता जागता सबूत है। यदि ये यह कहें कि आज के दिन परमात्मा ने दादा लेखराज के तन से जन्म लिया। इनका यह कथन तो पागलपन की सीमा को भी पार कर गया है क्योंकि सभी अवतारवादियों ने परमात्मा का जन्म महिलाओं के तन से ही माना है परन्तु ये लोग पुरूष तन से जन्म होना मानते हैं। इनकी बुद्धि तो अजायबघर में रखने योग्य है। साप्ताहिक सत्संग की पुस्तक में इन्होंने लिखा कि परमात्मा शिव जिसके तन में प्रवेश करते हैं

प्रवेश करने के बाद उसका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं। परन्तु पम्पलेट में लिखा है कि प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश किया। मैं इनसे जानना चाहता हूँ कि परमात्मा शिव के प्रवेश करने से पहले ही लेखराज का नाम प्रजापिता किसने रखा ? आगे लिखा कि यह ६२ वीं शिवजयंती है। सन् १९९८ में ६२ घटा देने से सन् १९३६ में लेखराज के तन से शिव का जन्म हुआ। एक अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक के पृष्ठ १६८ पर लिखा है कि सिन्ध में १३ वर्ष तक (१९३७ से १९५० तक)सिन्ध में इन्होंने ओम मण्डली नाम का एक महिलाओं का संगठन बनाया इनके क्रिया कलापों को देखकर इनके सत्संग भवन (रासमण्डल) में लोगों ने आग लगा दी और इन पर व्यभिचार का मुकदमा चलाया वहीं से भाग कर करांची में आ गये और रहने के स्थान का नाम ओम भवन रखा गया वहां भी करांची के लोगों ने ७ अगस्त १९३८ को इनका घेराव किया वहां के जिला मजिस्ट्रेट ने सेक्शन ११२ तथा सेक्शन १०७ के अन्तर्गत ओम मण्डली के पांच व्यक्तियों के विरूद्ध नोटिस जारी किया इन पांच में लेखराज भी थे। इनके कथनानुसार लेखराज सन् १९३६ में ही प्रजापिता ब्रह्मा बन गये थे जबकि १९३७ में ओम मण्डली की स्थापना की थी और अपनी चेलियों को योग वत्स के नाम से पुकारते थे। करांची से भागकर ये आबू पर्वत पर सन् १९५० में आये वहां जमने के बाद अपने आपको परमात्मा सिद्ध करने के लिए एक नया फारमूला तैयार किया कि परमात्मा मेरे अन्दर प्रवेश कर गया है मैं जो कुछ भी कहता हूं वह मेरा कहा नहीं परमात्मा का कहा हुआ है। लोलुप स्वार्थी लोग इनके कथन को सत्य मानकर अपना स्वार्थ पूरा करने लगे। आगे लिखा कि सम्पूर्ण सुख एवं सम्पूर्ण शक्ति का वरदान ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारा दिला रहे हैं। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि इनके परमपिता परमात्मा लेखराज के मृत्यु के बाद उनके चेले जो सम्पूर्ण सुख वगैर किसी झंझट के भोग रहे हैं, अब इनमें भी महत्वाकांक्षा की आग सुलगने लगी है, इसीलिए ब्रह्मा, विष्णु, शंकर अपने आप को घोषित करने का कुचक्र चला रहे हैं। अब मैं इस पम्पलेट के पीछे लिखे संदर्भों को उद्धृत कर रहा हूँ पाठक अवलोकन करें।

(१.) त्रिमूर्ति परमात्मा शिव का परिचय व शिव और शंकर में अन्तर।

समीक्षा– इसी पम्पलेट में इन्होंने परमात्मा को निराकार लिखा है जब परमात्मा का कोई आकार ही नहीं है तब वह त्रिमूर्ति कैसे कहलायेगा यदि वह त्रिमूर्ति है तो निराकार नहीं हो सकता। एक ही व्यक्ति के शंकर, शिव, महेश, शम्भु, रूद्र, त्रिमुरारी, कामारि, नीलकण्ठ, भ्रषकेतु, कैलाशपति, महादेव आदि नाम अनेक है, जैसे तुम्हारे दादा के खूबचन्द कृपलानी, लखीराम, लेखराज, ब्रह्मादादा, शिवबाबा, दादा तो क्या ये सब अलग-अलग व्यक्ति है इसलिए शिव और शंकर में कोई अन्तर नहीं है।

(२) शिवरात्री का आध्यात्मिक रहस्य व शिव परमात्मा के अवतरण का समय।

समीक्षा– शिवरात्रि का अर्थ है शिव+रात्रि = शिव का अर्थ कल्याणकारी और रात्रि का रात रात्रि दो प्रकार की होती है। एक को शिवरात्री और दूसरे को अशिवरात्रि कहा जाता है। गर्मी के दिनों की रात्रियां शिव कहलाती है क्योंकि गर्मियों में लोगों को दोपहर अशिव होता है और रात्रि शिव होती है। ठण्ड के दिनों में रात्रि अशिव और दिन शिव हो जाता है। फाल्गुन मास से ठण्ड कम्म होने लगती है इसलिये लोग इसी माह में एक दिन शिवरात्रि के आगमन पर उत्सव मनाते हैं। परमात्मा को अवतार मानना पागलों एवं अक्ल के दिवालियों का ही कथन है किसी विवेकवान् का नहीं।

(३) शिवरात्रि-शिवजयंती, गीताजयंती तथा श्री कृष्ण जयंती पर परस्पर संबंध।

समीक्षा– देख अकद सुरइया, उन्हें अंगूर की सूझी। अन्धे को अंधेरे में दूर की सूझी ।। इन अक्ल के दिवालियों ने इसी कहावत को चरितार्थ करते हुए शिव गीता कृष्ण के जन्म को एक ही दिन मान लिया। दुनिया जानती है कि श्री कृष्ण जयंती भाद्रपद के कृष्णपक्ष की अष्टमी को मनायी जाती है और गीता कार्तिक मास में, शिव जयंती तो होती ही नहीं है मेरा इन्हें परामर्श है कि ये फिर से रांची के हास्पिटल की शरण लें।

(४) शिव को अमरनाथ, सोमनाथ, जगन्नाथ, पापकटेश्वर क्यों कहते हैं?

समीक्षा– शिवलिंग को जगन्नाथ कोई नहीं कहता ये दिवा स्वप्न तुम्हें कहां से आ गया शिव लिंगों के भारत में अनेकों नाम हैं कुछ मुख्य इस

प्रकार है रामेश्वर, विश्वनाथ, महाकालेश्वर, पशुपति, जागेश्वर, अमरनाथ, सोमनाथ, जटाशंकरादि अनेकों नाम हैं।

(५) शिव के आगे नन्दी क्यों दिखाते हैं ? भागीरथी कौन है ?

समीक्षा– इतनी सी सरल बात भी जब तुम लोगों की समझ में नहीं आती कि शिव की सवारी बैल है इसलिए सवारी को आगे दिखाया जाता है कि लोग सवारी को देखकर यह जान लें कि यह शंकर का मन्दिर है इसीलिये विष्णु के मन्दिर के सामने गरूड की प्रतिमा रहती है और दुर्गा मन्दिर के सामने शेर की। भगीरथ अयोध्या के राजा थे जिन्होंने हिमालय में बर्फ पिघलने से जो पानी इधर–उधर बह कर नष्ट हो जाता था उसे एक दिशा में बहाने के लिये वर्षों अत्यधिक परिश्रम किया और उनके किये हुए परिश्रम के कारण ही आज तक लोग गंगा के साथ उसका नाम स्मरण करते हुए भगीरथी गंगा कहते हैं।

(६) शिव से पानी की गंगा निकली अथवा ज्ञान अमृत की गंगा निकली ?

समीक्षा– गंगा हिमालय पर्वत से निकली है शिव से नहीं और ज्ञान वेदों से।

(७) गीता ज्ञानदाता निराकार शिव है न कि कृष्ण देवता। गीता से श्री कृष्ण का जन्म हुआ न कि कृष्ण ने गीता को जन्म दिया यही कृष्ण राज्याभिषेक के बाद श्री नारायण कहलाते हैं ।

समीक्षा– क्या तुम लोगों ने कसम खा रखी है कि हम लोग जीवन में कभी भी सत्य नहीं बोलेंगे। पागल से पागल व्यक्ति भी कभी न कभी सत्य बोल देता है। परन्तु तुम लोग तो ऐकां लज्जां परित्यज्य विजयी सर्वत्र भवेत् की कहावत को ही चरितार्थ कर रही हो कि लज्जा को छोड दो तो विजय ही विजय है। अब यह बतलाओ कि जिस दादा लेखराज को शिव कहती हो क्या गीता उसी लेखराज की कही हुई है। और लेखराज ने जब अपनी लडकियों ,भतीजियों की शादी में जो श्रीमद्‌भगवद् गीता सभी को दी थी क्या वह उन्हीं की लिखी थी। एक अद्‌भुत जीवन कहानी के पृष्ठ २७ में लिखा है कि गीता शास्त्र जिसे वे नित्य प्रति पढा करते थे। दादा को ऐसा अनुभव होता कि यह अर्जुन है और स्वयं भगवान् उनकी ज्ञान पिपासा तृप्त कर रहे हैं। अब तुम्ही बताओ कि अर्जुन को गीता कृष्ण ने सुनाई थी

कि तुम्हारे कल्पित शिव ने। मूर्ख से मुर्ख व्यक्ति भी ऐसा प्रश्न नहीं करेगाकि गीता से कृष्ण का जन्म हुआ या कृष्ण ने गीता को जन्म दिया। अब मैं तुमसे प्रश्न करता हूँ जो उत्तर तुम मुझे दोगी वही उत्तर तुम्हारे प्रश्न का होगा। यह बतलाओ कि जो पम्पलेट तुमने लिखकर दी है उन पम्पलेटों ने तुम्हें जन्म दिया है कि तुमने पम्पलेटों को जन्म दिया है। आगे लिखा कि यही कृष्ण राज्याभिषेक के बाद श्री नारायण कहलाते हैं। श्री कृष्ण का राज्याभिषेक कभी हुआ ही नहीं इससे सिद्ध है कि तुम लोग सत्य की महान् त्यागी हो महाभारत और गीता का स्वरूप और सार नामक पुस्तक के पृष्ठ २७७ में लिखा है कि श्री कृष्ण नाम तो स्वयंवर से पहले का और श्री नारायण नाम स्वयंवर के बाद का था। अब यह बतलाओ कि तुम्हारा पम्पलेट झूठा है कि पुस्तक झूठी है क्योंकि दोनों बातें जो सत्य हो नहीं सकती।

(८) त्रिमूर्ति परमात्मा शिव अभी पतित भ्रष्टाचारी विकारी दुनिया के महाविनाश होने से कुछ समय पहले कलियुग के अन्त में ज्ञान दे रहे हैं न कि द्वापर युग में दिया था।

समीक्षा– पहली बात तो यह है कि जो परमात्मा होगा वह मूर्तिमान् नहीं होगा। जो मूर्तिमान् होगा वह परमात्मा नहीं होगा। त्रिमूर्ति का तो प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता है और दूसरी बात यह है कि परमात्मा का मुख्य नाम हो सकता है किसी एक गुण को लेकर जैसे कल्याण करना एक गुण है इसी तरह परमात्मा के अनेक गुण हैं उसके आधार पर सैकडों नाम है परन्तु उसका मुख्य नाम ओम् ही है। झूठ बोलने वाले से ज्यादा पतित और कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि झूठ बोलने वाला कोई ऐसा दुष्कर्म नहीं जो वह न कर सकता हो। और यह संस्था झूठ बोलने में अग्रगामी है। भ्रष्टाचार दुनिया से कभी मिट नहीं सकता क्योंकि जब तक भ्रष्टाचार है तभी तक सदाचार की पहिचान और कीमत है। विकार से संसार उत्पन्न होता है क्योंकि पंच महाभूत प्रकृति के ही विकार हैं विकारों के विनाश से संसार का विनाश हो जायेगा। विनाश और सृजन तो सृष्टि में पल–पल में हो रहा है रही बात महाविनाश की वह तब होता है जब सृष्टि की आयु पूर्ण हो जाती है अभी तो सृष्टि की आयु आधे से ज्यादा शेष है अभी महाविनाश

कहना पागलपन है। कलियुग के अन्त होने में अभी ४२६९०२ वर्ष शेष है। इसका भी अंत कहना बुद्धिहीनता का ही परिचायक है। तुम्हारा शिवबाबा अक्ल का दिवालिया तो है ही फिर तुम में अक्ल न होना स्वाभाविक है। क्योंकि तुम्हारे शिव का कथन है कि कलियुग अन्तिम सांस ले रहा है इसलिये अभी ज्ञान देना जरूरी है। मरणासन्न को ज्ञान देना राख में होम करना है यदि उसमें अक्ल होती तो कलियुग के बचपन में ही ज्ञान देता। दुनिया में भी यही होता है लोग बच्चों को ही ज्ञान देते हैं मरने वाले बूढ़े को नहीं। इसलिये गीता का ज्ञान द्वापर के अन्त और कलियुग प्रारम्भ में ही दिया गया था।

बातहि बात मरे दशरथ, बातहि ते राम बनवास जाई।
बातहि ते हरिश्चन्द्र बिके, बातन की रखहु सचाई ॥
जिनके बातन ठीक नहीं,
तिनके बापन ठीक न जानहु भाई।

दशम परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

आज मेरे समक्ष इनके सम्प्रदाय की महत्त्वपूर्ण पुस्तक **''महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार''**–नामक पुस्तक है। लेखक जगदीशचन्द्र है इसी लेखक की चार पुस्तकें और मेरे पास है जिनके नाम निम्न प्रकार है– **अव्यक्तवाणी** लेखक बी.के.जगदीशचन्द्र, सच्ची मन की शान्ति ले. जगदीशराम,ज्ञान के अनमोल रत्न ले.जगदीशचन्द, साप्ताहिक पाठ्यक्रम लेखक जगदीशचन्द्र। लेखक ने अपनी हर पुस्तक में अपने नाम का परिवर्तन किया है। जैसे–जगदीश, जगदीशचन्द्र, जगदीशराम आनंद, बी. के. जगदीशचन्द्र। इन चार प्रकार के नामों में से लेखक का मुख्य नाम क्या है और वह इस प्रकार से नामों में परिवर्तन क्यों कर रहा है यह एक गंभीर प्रश्न है ? नाम परिवर्तन तो वे लोग करते हैं जो ठगी,अनैतिककार तस्करी आदि कार्यों में लिप्त रहते हैं और कानून से बचने के लिये नामों में परिवर्तन करते रहते हैं। मेरे समक्ष जो पुस्तक है वह ५६८ पृष्ठ की है ,पूरी पुस्तक में कहीं भी सत्य और विद्या का प्रयोग नहीं हुआ,केवल अनर्गल प्रलापों से पुस्तक का कलेवर भर गया है और पुनरूक्ति दोष से परिपूर्ण है।अब मैं पाठकों के समक्ष इनके लिखे कुछ अनर्गल प्रलापों के नमूने प्रस्तुत कर रहा हूँ अवलोकन करें। यादव लोग मथुरा द्वारका में नहीं रहते थे। अमेरिका में रहते थे। कृष्ण का जन्म राम जन्म से पहले हुआ उनका न कोई भाई था न लडका। जब तक उनका विवाह (स्वयंवर) नहीं हुआ तब तक उनका नाम कृष्ण था। राधा के साथ विवाह होते ही उनका नाम नारायण हो गया और राधा का नाम लक्ष्मी हो गया। कृष्ण ने गीता का ज्ञान अर्जुन को नहीं दिया ब्रह्माकुमारियों को दिया। महाभारत युद्ध के बाद सतयुग लग गया। महाभारत ग्रन्थ ईसा पूर्व ४०० वर्ष में लिखा गया। व्यास ने लोक गीतों को संग्रह कर महाभारत लिखा। ईसा की ८ वीं सदी से कलियुग लगा और २००० ईसवी में सृष्टि का प्रलय हो जायेगा फिर सतयुग लग जायेगा। यह पूरी पुस्तक कूडे–कचरे से भरी है यद्यपि कूडे–कचरे से भी कुछ लोग गुजारा कर लेते हैं। उस कचरे में से ही कुछ नमुने मैंने

पाठकों के समक्ष में रखे हैं। **स्वार्थी किम् न करोति पापम्**। दुनिया का वह कौन सा ऐसा पाप है जिसे स्वार्थी न कर सकता हो। स्वार्थी को अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए झूठ का सहारा लेना ही पडता है। जब से यह मानवी सृष्टि हुई है तभी से लोग एक-एक दिन बढाते गिनती करते आ रहे हैं और बीच-बीच में जो प्रतापी राजा नवीं आदि हुये हैं उन्होंने भी अपने-अपने नाम में सम्वत् चलाई है जिससे उनके होने के समय का पता चलता है। अब मैं उन प्राचीन और अर्वाचीन सम्वत्सरों को प्रस्तुत कर रहा हूँ। सर्वप्रथम सृष्टि की आयु का अवलोकन करें। सृष्टि की आयु एक कल्प होती है जिसे ब्रह्मा का एक दिन माना जाता है और इतनी ही बडी रात होती है। एक कल्प में एक हजार चतुर्युगी होती है। परमाणुओं के सक्रिय होने से लेकर पृथ्वी के पूर्ण विकास तक ६ चतुर्युगी व्यतीत हो जाती है २५९२०००० वर्षों के बाद मानव सृष्टि होती है जो ९९४ चतुर्युगों तक रहती है इसकी भी संज्ञा कल्प ही रखी गई इस कल्प को सरलीकरण करने के लिये इसे १४ भागों में विभाजित किया गया है भागों का नाम मन्वन्तर है एक कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं फिर मन्वन्तर को सरल करने के लिये उसे ७१ भागों में बांटा गया है जिसे चतुर्युगी कहते हैं एक चतुर्युगी ४३२०००० वर्षों की होती है। सतयुग १७२८००० वर्षों का होता है त्रेता युग१२९६००० वर्षों का होता है द्वापर युग ८६४००० वर्षों का होता है कलियुग ४३२००० वर्षों का होता है। मानव सृष्टि के उत्पन्न होने से अब तक ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं। सातवा वैवश्वत मन्वन्तर चल रहा है। जिसका यह वर्तमान कलियुग अट्ठाइसवां कलियुग है अब मानवी सम्वत्सरों का अवलोकन करें आर्य सम्वत्सर आदि मनुओं से अब तक १,९६,०८,५३,०९८ वर्ष हुए हैं। चीनी सम्वत् चीन के प्रथम बादशाह से ९६००२४९८ वर्ष हुए आज तक जो कि आर्य संवत् से १८६४८४९६०० वर्षों पीछे शुरू हुई। खतई संवत् खता के पहले आबाद करने वाले से ८८८४०३७१ वर्ष आज तक हुए जो कि चीनी संवत् से ७१३२१२७ वर्ष पीछे शुरू हुआ। पारसी संवत् को ईरान के पहले बादशाह से १८९९३८ वर्ष आज तक हुए। खतई संवत् से ८८६५०४०३ वर्ष पीछे शुरू हुआ। कालडिया संवत् वहां के पहले पुरूष उन से चली १५१९९८ वर्ष आज तक

हुए जो कि पारसी संवत् से ३७९७० वर्ष पीछे शुरू हुई। मिसरी संवत् जो मैनस बादशाह से चली २७६५२ वर्ष आज तक हुए जो कि कालदिया संवत् से १२४३४६ वर्ष पीछे शुरू हुआ। इंबरानी संवत् आदम और उनकी मानी हुई दुनिया की पैदाइस से ५९०२ वर्ष आज तक हुए जो कि मिसरी संवत् से २१६५० वर्ष पीछे शुरू हुआ। युधिष्ठिरी संवत् को ५१३८ वर्ष हुए जो कि इबरानी संवत् से ७६४ वर्ष पीछे शुरू हुआ। कलियुगी संवत् ५०९८ वर्ष आज तक जो युधिष्ठिरी संवत् से ४० वर्ष पीछे शुरू हुआ। नूह का संवत् जो कि नूह के समय से शुरू हुआ उसको ५०९८ वर्ष आज तक हुए जो कि कलियुगी संवत् के साथ ही शुरू हुआ। स्पार्ट का संवत् जो कि स्पार्ट की नीव पडने के समय सेशुरू हुआ उसको ३७०२ वर्ष अभी तक हुए जो कि शुरू नूह की संवत् से १३९६ वर्ष पीछे शुरू हुआ। इब्राहीमी संवत् जो कि इब्राहीम से शुरू हुआ ३६१९ वर्ष आज तक हुए जो की स्पार्ट संवत् से ८३ वर्ष पीछे शुरू हुआ। मूसबी संवत् मूसा से शुरू हुई ३५७१ वर्ष हुए जो कि इब्राहीमी संवत् से ४८ वर्ष बाद शुरू हुआ। दाऊदी संवत् दाऊदी के समय से शुरू हुआ ३०३७ वर्ष आज तक हुआ जो कि मूसबी संवत् से ५३४ वर्ष पीछे शुरू हुआ। यूनानी संवत् ओलम्पिया के अखाडे से शुरू हुआ २७७४ वर्ष हुए जो कि दाऊदी संवत् से २६२ वर्ष पीछे शुरू हुआ। रोमी संवत् रोम नगर की नीव पडने के समय से २७५१ वर्ष आज तक हुए जो कि यूनानी संवत् से २३ वर्ष से पीछे हुआ। नाबूमारी संवत् से बाबुल के पहिले बादशाह से शुरू हुआ। २७४५ वर्ष आज तक हुए हैं। जो कि रोमी संवत् से ६ वर्ष पीछे शुरू हुआ। बौद्ध शाक्य मुनि संवत् बुद्ध के पचासवे वर्ष से २५७२ वर्ष आज तक हुए जो कि नाबुमारी संवत् १७३ वर्ष पीछे शुरू हुआ। सिकन्दरी संवत् सुल्तान सिकन्दर जुलकहन के समय से २३५२ वर्ष आज तक हुए जो कि बौद्ध शाक्य मुनि संवत् से २२० वर्ष पीछे शुरू हुआ। विक्रमी संवत् विक्रमादित्य के समय से २०५५ वर्ष आज तक हुए जो कि सिकन्दरी सवंत् से २५७ वर्ष पीछे शुरू हुआ। ईसवीं सन् ईसा के जन्म से चार वर्ष पीछे से १९९८ वर्ष आज तक हुए जो कि विक्रमी संवत् से ५७ वर्ष पीछे शुरू हुआ। शाल वाहन संवत् महाराजा शालवाहन से १९२० वर्ष आज तक हुए जो कि ईसवीं सन् ७८ वर्ष पीछे शुरू हुआ। मोहम्मदी संवत् महम्मद के मक्का

से मदीना चले जाने के समय से १४१६ वर्ष आज तक हुए जो कि शाली वाहन से ५०४ वर्ष पीछे शुरू हुआ। विज्ञ पाठकों के समक्ष मैंने जब से यह सृष्टि बनी तब से लेकर अभी तक ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किये है। अब जरा इन अक्ल के दिवालियों द्वारा लिखा गया सृष्टि क्रम देखिये इनका कथन है कि चारों युगों का समय काल केवल ५००० वर्षों का ही है। बारह-बारह सौ वर्षों के चारों युग होते हैं जब देखा कि बारह सौ का योग तो ४८०० वर्ष ही होता है तब फिर लिखा कि १२५० वर्षों के चारों युग होते हैं अब इनके समक्ष यह समस्या खड़ी हो गई कि जो हम पाँचवा संगम युग कहते हैं उसके लिये दिन कहां से लाये। इन्होंने आज तक यह नहीं दर्शाया कि कलियुग कब से लगा केवल यह ही चिल्लाते रहते हैं कि कलियुग समाप्त हो रहा है। सतयुग लगने वाला है। इनके इस कथन से कि सन् २००० में प्रलय हो कर फिर सतयुग लग जायेगा। यदि हम इनकी बात को दुर्जनतोष न्याय से मान लें तो २००० में १२०० घटा देने से ईसवीं सन् ८०० से कलियुग लगा यह सिद्ध हो जाता है और द्वापर युग ४०० वर्ष ईसा पूर्व लगा तब मोहम्मद, शाली- वाहन, ईसा, विक्रमी, सिकन्दर की जो संवते चल रही हैं वह सब द्वापर युग की है और १६०० वर्ष ईसा पूर्व से त्रेतायुग लगा तब गौतम बुद्ध, बाबुल का बादशाह, रूम नगर की नीव पडी, यूनानी संवत्, दाऊद, मूसा सब त्रेतायुग में हुए और २८०० वर्ष ईसा पूर्व से सतयुग लगा तब स्पार्ट वसा और इब्राहीम हुआ। इनके हिसाब में नूह, युधिष्ठिर, आदम, मैनस बादशाह, कालदिया, पारसी, खता, चीनी आदि ये हुए ही नहीं है जिनकी संवतें चल रही हैं। इनका कथन है कि गीता ज्ञान परमात्मा शिव ने ५००० वर्ष पूर्व कलियुग के अन्त में दादा लेखराज के तन में प्रविष्ट होकर दिया था। अब फिर कलियुग के अन्त में फिर से दे रहे हैं। क्योंकि सृष्टि चक्र में ५००० वर्ष के बाद फिर वही क्रम दुहराया जाता है। जैसा कि पहले हुआ था और पात्रों में भी परिवर्तन नहीं होता। यदि हम इनकी यह बात मान लें कि द्वापर के अन्त में कृष्ण ने गीता ज्ञान नहीं दिया गीता ज्ञान तो कलियुग के अन्त में लेखराज ने ही दिया था। तब प्रश्न यह है कि क्या उस कलियुग में भी गांधी, जवाहर, सुभाष, जिन्ना आदि थे और हिन्दुस्तान का बंटवारा होकर पाकिस्तान बना था हमारे लोगों की निर्मम हत्या की गई

थी और दादा लेखराज ने एक साधरण स्कूल मास्टर के घर में जन्म लिया था। फिर गेहूँ का धन्धा करने लगे थोक खरीद कर फुटकर बेचते थे फिर एक तस्कर सट्टेबाज को गुरू बनाकर जवाहरातों का धन्धा करने लगे। फिर ओम् मंडली नाम की संस्था खोलकर रासलीला करने लगे तब लोगों ने इनकी उस ओम् मंडली (रासमंडल) के कार्यालय को आग लगा कर भस्म कर दिया और वे भागकर करांची चले गये। वहाँ भी लोगों ने इन पर अदालत में अभियोग चलाया। फिर वहां से भागकर भारत आ गये यहां आकर प्रजापिता ब्रह्मा अपना नाम रखा। ये सब उस कलियुग में हुआ था क्या इसका उत्तर दे सकते हैं ? अब जरा इनके योग का भी रहस्य देखो दादा लेखराज अपने चेलियों को योग के माध्यम से ध्यान लगाना सीखाते थे इनकी शिक्षा के आधार पर चेलियां ध्यान में क्या देखती थी इनकी ही एक चेली का वयान सुनिये। मैं सत्संग के स्थान पर बैठे-बैठे अचानक ही ध्यानावस्था में चली गई। मेरे आस-पास जो मातायें बैठी थीं उन सबने यह सोचा कि शायद यह सो रही है। परन्तु काफी समय से एक ही आसन पर स्थिर बैठे देखकर कुछ का मेरी ओर ध्यान गया। मैं तो इस संसार से परे दूसरे लोक का अनुभव कर रही थी। मैंने क्या देखा कि एक बहुत बडा हाल है जिसकी सजावट ऐसी सुन्दर थी कि इस कलियुगी संसार में वैसी मिलना असंभव है। ऐसे सुन्दर हाल में लगभग १० वर्ष की आयु वाले सजे सजाये मोहिनी मूर्त श्री कृष्ण अपनी अंगुली से मुझे इशारा कर रहे थे कि आओ मेरे साथ रास करो। (एक अदभुत जीवन कहानी के पृष्ठ ४९ से) स्वप्न में वहीं दृष्टि गोचर होता है व्यक्ति जिस विषय का चिन्तन करता है इन चेलियों को रास लीला का ही प्रशिक्षण दिया जाता रहा होगा इसीलिए इन्हें स्वप्न भी रासलीला के ही आते हैं। रही बात ध्यान की तो ध्यान क्या है इसे लेखराज भी नहीं जानते थे केवल नाम सुन रखा है तो फिर चेलियों को कहां ज्ञात होगा।

''एक अद्भुत जीवन कहानी'' के पृष्ठ ९० में लिखा कि भगवान् की मुरली सुनकर गोपियां मस्त हो जाती थी और वे भागकर वहां पहुंच जाती थी परन्तु उनके लौकिक संबंधी पुरूष उनको रोकते थे। अब हमने अपने प्रेक्टीकल अनुभव से जाना कि हम तो ज्ञान मुरली को सुनकर

अतिन्द्रिया सुख से फूली नहीं समाती हैं परन्तु हमारे लौकिक भाई बान्धव आदि हमे मुरली सुनने के लिए जाने से रोकते हैं। अत: हमे इनके इस बयान से स्पष्ट है कि सभी ब्रह्माकुमारी अपने आपको कृष्ण की गोपियां ही मानती हैं और कृष्ण लेखराज को मग्न कर रासक्रीडा में निमग्न रहती है । लोक लाज से बचाने के लिये वे अपने आप को ज्ञान गोपियां कहती हैं। जैसे गांजा पीने वाले लोग भी यही कहते हैं कि हम सत्संग में जा रहे हैं और गंगा पीकर सत्संग प्राप्त करते हैं उसी तरह वे लोग भी रासक्रीडा करके ज्ञान प्राप्त करती हैं और उस ज्ञान का नाम मुरली कहती हैं। एक अद्‌भुत जीवन कहानी के पृष्ठ २५ में एक ब्रह्माकुमारी कहती है कि गुरू का भाषण चल रहा था परन्तु दादा सभा से उठ गये इससे पहले कभी भी दादा सभा से उठकर नहीं गये थे । मेरा ध्यान दादा की ओर गया तब मैंने यशोदा जो कि दादा की धर्मपत्नी थी को दादा के पास भेजा। यशोदा जी के जाने के बाद मुझे ख्याल आया कि मैं भी जाऊं । मैं दादा के कमरे में गई और दादा के पास बैठ गई और यशोदा जी गुरू की सभा में लौट गई। दादा सभा छोडकर शायद इसलिए चले गये हों कि मुरली बजाने की इच्छा बलवती हो गई हो। जब उनकी पत्नी और एक गोपी भी पहुंच गई तब दादा असमंजस में पड गये होंगे कि मुरली तो एक ही है और उसका आनंद लेने वाले दो हो गये तो दादा ने अपनी पत्नी से कहा होगा कि तुम मुरली का आनंद लेती ही रहती हो आज इस गोपी को भी ले लेने दो यह सुनकर पत्नी चली गई तब दादा ने एकान्त में मुरली बजानी शुरू की और मुरली से उत्पन्न ज्ञान गोपी के शरीर में प्रविष्ट होकर उसे आनन्दित करने लगा होगा।

एकादश परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार नामक पुस्तक में लेखक ने अपनी हठ धर्मी का ही परिचय देते हुए एकां लज्जां परित्यज्य विजयी सर्वत्र भवेत् की कहावत को ही चरितार्थ किया है, जिसने लज्जा को त्याग दिया हो वह सब कुछ कह सकता है। ऐसे लोग कृषि रूपी धार्मिक जगत् में ओले (बर्फ) बनकर कृषि को नष्ट कर स्वयं नष्ट हो जाते हैं। लेखक पुस्तक के पृष्ठ २७४ में लिखता है कि गीता ज्ञान कृष्ण ने पूर्व में प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में प्राप्त किया था परमपिता शिव ही ने उनके पूर्व जन्म वाले मानवीय तन में आकर दिया था।

समीक्षा– मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक कोई मादक द्रव्य का आदी है, या फिर सन्निपात का रोगी है। लेखक को यह बताना चाहिए कि कृष्ण का पूर्व जन्म कहां और किसके यहां हुआ था तुम्हारा कथन है कि यादव-अमेरिका में रहते थे तो अब यह बताओ कि तुम्हारे लिंग स्वरूप शिव ने कृष्ण के शरीर में प्रवेश कर गीता ज्ञान अमेरिका में दिया था या भारत में। तुम्हारा यह भी कहना है कि पूर्व कलियुग के अन्त में जो व्यक्ति थे सब वहीं ज्यों के त्यों वगैर किसी परिवर्तन के इस युग के अन्त में है। जब पूर्व में तुम्हारे शिव ने कृष्ण को गीता ज्ञान दिया था तो अब कृष्ण को न देकर अनपढ दादा लेखराज को क्यों दिया ? मूर्ख व्यक्ति भी इस प्रकार की अनर्गल बातें नहीं कहता।

पृष्ठ २७५– श्री कृष्ण का ही दूसरा नाम श्री नारायण था। आप जानते होंगे कि भारत में पहले यह प्रथा थी कि स्वयंबर होने पर वर वधू दोनों का नाम प्रायः बदल दिया जाता था। इसी प्रथा के अनुसार त्रेता युग में जानकी जी का नाम बदलकर श्री सीता जी हुआ था।

समीक्षा– कृष्ण का नाम नारायण नहीं था, नारायण, विष्णु, हरि ये पर्यायवाची है, पुराणों के आधार पर महाप्रलय पर जब विष्णु समुद्र के अंदर शेष शय्या पर विश्राम करते हैं तब उनका नाम नारायण रखा। नर+ अयन् = नर कहते हैं और पानी को अयन कहते हैं घर अर्थात्

जिसका घर पानी में हो उसको नारायण कहते हैं। वही नारायण जब बैकुंण्ठ में रहते हैं तो उन्हें विष्णु कहते हैं और हरि भी। ये कल्पना बिल्कुल मूर्खता पूर्ण है कि कृष्ण का नाम नारायण था, क्योंकि कृष्ण को विष्णु का अवतार मानते थे। इसलिए उन्हें नारायण हरि आदि नामों से संबोधित करते थे। भारत में यह प्रथा कभी नहीं रही कि विवाह संस्कार में नाम संस्कार हो। यह कहना विवाह में वर और वधू का नाम बदल दिया जाता था। यह निराधार कल्पना है। तुमने जो लिखा जानकी का नाम विवाह के बाद बदलकर सीता रखा गया, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने कभी स्वप्न में भी रामायण आदि ग्रन्थों को नहीं देखा। जानकी का नाम पैदा होते ही सीता था, उपनाम में सीता के जानकी, जनक पुत्री, जनक दुलारी, जनक लली, मैथिली कुमारी, सब उपनाम थे और यही उपनाम उर्मीला के भी थे मैथिली, जनक दुलारी आदि, तुमने जो ये लिखा कि वर वधू के नाम बदल जाते हैं तो राम का नाम क्यों नहीं बदला।

पृष्ठ २८०– श्री कृष्ण ने वास्तव में सतयुग के आरम्भ में जन्म लिया था।

समीक्षा– मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक पूर्णरूप से दुराग्रही है और उसे यह भी होश नहीं है कि मैं क्या लिख रहा हूँ, क्योंकि पहले इसने, लिखा कि कृष्ण का जन्म कलियुग के अंत में संगम युग में हुआ, और यहां लिखता है कि सतयुग में हुआ। इस तरह से परस्पर विरोधी बातें तो विवेक बुद्धि- वाला व्यक्ति नहीं लिख सकता है।

पृष्ठ २७७– आज भी आप देखते हैं कि श्री नारायण तथा श्री लक्ष्मी के राजतिलक का दिव्य उत्सव अर्थात् दीपावली का त्यौहार है।

समीक्षा– लेखक ने अपनी निराधार कल्पना से शेखचिल्ली को भी मात दे दी है। गप्प का भी कोई आधार होता है परन्तु इसने राजतिलक तो लिख दिया लक्ष्मी और नारायण का, परन्तु यह नहीं बताया कि वह कौन सा राज्य था जहां कि ये राजा बने और इनसे पहले वहां का राजा कौन था।

पृष्ठ २८४– में लिखा कि ब्रह्मा की सर्वश्रेष्ठ पुत्री सरस्वती ने श्री राधा अथवा श्री लक्ष्मी के रूप में जन्म लिया और दूसरी जगह लिखा कि राधा

का स्वयंवर कृष्ण के साथ हुआ तब कृष्ण नारायण कहलाये राधा लक्ष्मी कहलाई।

समीक्षा– मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक नीम पागल है। राधा कृष्ण का नाम इसने लोगों से सुना और समझ लिया कि राधा कृष्ण की पत्नी होगी। तो स्वयंवर की कल्पना कर ली जबकि कृष्ण का जब जन्म हुआ था तब राधा की आयु ३० वर्ष की थी। वह कृष्ण को गोद में लेकर खिलाती थी। राधा का विवाह यशोदा के भाई रायन के साथ हो गया था। रिश्ते में राधा कृष्ण की मामी होती थी, जो मां के बराबर कहलाती है। राधा को कृष्ण की पत्नी कहते लज्जा को भी लज्जा आयेगी। परन्तु लेखक को नहीं आयी, शायद इसलिए कि वह उस संस्था का सदस्य है, जहां लज्जा नाम की कोई चीज ही नहीं है।

पृष्ठ ४३३– हमारा उद्देश्य शब्दकोश व्याकरण या निरूक्त इत्यादि को लेकर गीता की कोई टीका लिखना नहीं है। हममे न तो शब्द शास्त्र की विद्वत्ता है न ही गीता शास्त्र का पाण्डित्य, हमने तो सेवार्थ ही इस विषय पर लेखनी उठाई है। करूणा सिन्धु ज्योति बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा हमें जो ज्ञान रूपी अमृत अथवा संजीवनी प्रदान की है, इसमें हमारा अपना कुछ भी नहीं है सब प्रभु की देन है।

समीक्षा– लेखक ने शायद पहली बार ही सत्य बोला कि मुझे न तो शब्द कोश का ज्ञान है और न व्याकरण निरूक्त का ज्ञान है, न गीता शास्त्र का अर्थ कर सकता हूँ। मैंने तो जो कुछ प्रजापिता ब्रह्मा यानि दादा लेखराज से सुना सीखा है वही लिखा हूँ। इतना कथन लेखक का पूर्ण सत्य है। क्योंकि इनकी लिखी हुई गप्पों से यह सिद्ध है कि लेखक में विद्या का अभाव है। इनके गप्पों के मार्गदर्शक लेखराज दादा हैं। दादा उसे कहते हैं जो गुण्डा मुहल्ले, गांव, शहर में आतंक फैलाता है उसे भयभीत लोग दादा कहकर उसे खुश रखने का प्रयत्न करते हैं और उसकी हर बात में हां में हां मिलाते हैं और वह गुण्डा लज्जा का महान् त्यागी होता है, और उसके हर अनुयायी भी उसी महानता के अनुयायी होते हैं।

पृष्ठ ४३३– लेखक ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय

विश्वविद्यालय के सम्पर्क में आने के बाद जब उस परमपिता परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान प्राप्त किया तब उसमें उसे जो अर्थ साक्षात्कार हुआ उसी के आधार पर तथा उसी दृश्य से यहां सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि गीता का सार लिखा गया है।

समीक्षा– लेखक से मैं यह जानना चाहता हूँ कि ईश्वरीय विद्या तो वेद है। क्या इस विद्यालय में वेद पढाये जाते हैं, और क्या तुमने वेद पढे हैं ? यदि नहीं तो फिर इसका नाम ईश्वरीय विद्यालय कैसे रखा ? शायद इसलिए कि आजकल के फैशन के अनुसार लोग कुत्ता पालते हैं, और उसका नाम 'टाइगर' रख देते हैं जबकि कुत्ता कुत्ता ही रहता है, शेर कभी नहीं होता, और तुम्हारे शिव ने जो ज्ञान लेखराज सिन्धी को दिया था वह किस भाषा में दिया था। संस्कृत में था सिन्धी व हिन्दी में। संस्कृत तो तुम्हारे दादा जानते ही नहीं थे और सिन्धी व हिन्दी शिव नहीं जानते थे। तो वहां दो भाषिया कौन था, जो शिव की संस्कृत भाषा सुनकर लेखराज को सिन्धी में बताता था। तुमने सब शास्त्र शिरोमणि गीता लिखा है यह तुम्हारे मूर्खता का जीता जागता सबूत है। शास्त्र उसे कहते हैं, जिसमें विधि, निषेध को तर्क युक्ति से सिद्ध किया गया हो किसी के उपदेश को शास्त्र नहीं कहते और शिरोमणि उसे कहते हैं जो सर्वप्रथम लिखा गया हो। तुममें यदि साहस हो तो यह बताओ कि गीता के बाद में कौन–कौन से शास्त्रों की रचना हुई और किसने किस समय में की, केवल कोरी गप्प लिखकर विद्वानों में उपहास के पात्र मत बनो। पहले तुम्हारा नाम भोंदुचन्द था जब से तुम इस संस्था में आये और देखा कि यहां गोपियां ही गोपियां हैं तब तुमने अपना नाम बदलकर जगदीशचन्द रख दिया क्योंकि लोग श्री कृष्ण को भी जगदीश कहते हैं और बगैर कृष्ण बने रास लीला करना संभव नहीं था, इसलिए दादा लेखराज ने भी सर्वप्रथम अपने को कृष्ण अवतार कहा फिर रासलीला शुरू की थी।

द्वादश परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

आज मेरे समक्ष ज्ञान के अनमोल रत्न पुस्तक हैं लेखक है श्री जगदीश प्रकाशक प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पाण्डव भवन आबू पर्वत (राजस्थान)

पुस्तक के पृष्ठ ६ पर लिखते हैं- जगत् माता शीर्षक से प्रश्न उठता है कि निराकार परमात्मा शिव तो अविनाशी होने के नाते हम सभी आत्माओं के पिता हैं। पर जगदम्बा जो कि शरीर धारी है। वह सारे जगत् की माता कैसे है इसका सही उत्तर जानने के लिये जगदम्बा माता के अलौकिक कर्त्तव्यों को समझाना होगा। इस अलौकिक माता का पूरा कर्त्तव्य वाचक नाम शिव वंशी ब्रह्माकुमारी आदि देवी जगदम्बा सरस्वती है।

समीक्षा– श्री जगदीश के इस लेख ने तो अक्ल के दिवालियेपन को भी मात दे दी है। ब्रह्माकुमारियों को शिववंशी लिखकर / वंश उस पुरूष के नाम से चलता है जिसने संतान उत्पन्न की हो और वह उत्पन्न की हुई सन्तान भी सन्तानों को उत्पन्न करती चली आ रही हो और माता कहलाने के लिए पति और पुत्र होना आवश्यक है। अब देखना यह है कि इनकी जगत् माता,ब्रह्माकुमारी का पति कौन है और पुत्र कौन है तथा इनका अलौकिक कर्त्तव्य क्या है ? ये लोग शिव को निराकार कहते हैं और निराकार से कोई वंश चल ही नहीं सकता तब अपने आप को शिववंशी लिखना उन्माद के सिवाय और कुछ भी नहीं है। ब्रह्माकुमारी लिखने से तो यही सिद्ध होता है कि ये ब्रह्मा की पुत्रियां हैं और ये लेखराज को प्रजापिता ब्रह्मा कहती हैं तब ये सब लेखराज की पुत्रियां कहलाईं लेखराज की पत्नी का नाम यशोदा है तो क्या ये सब ब्रह्माकुमारियां यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई हैं यदि नहीं तो क्या लेखराज ने इनकी माताओं को पुत्री का वरदान दिया है मेरी समझ में यह नहीं आता कि ब्रह्माकुमारी कहने का औचित्य क्या है। एक बात इन्होंने और मजेदार लिखी हैं कि ब्रह्माकुमारी अलौकिक कर्त्तव्य कर के माता बनाती हैं संसार में पशु पक्षियों

से लेकर मनुष्य तक सभी एक ही नियम के अन्तर्गत प्रजनन क्रिया का सम्पादन करते हैं जिसे ये लौकिक कहते हैं ।अब देखना यह है कि ब्रह्माकुमारी कौन सा अलौकिक कर्त्तव्य कर के माता बनती है। आज तक तो इन्होंने कोई ऐसा अलौकिक कर्त्तव्य कर के दिखाया नहीं जो कि गिनिज बुक में लिखा जा सके और इनके दादा लेखराज जिन्हें ये परमात्मा शिव कहती हैं उन्होंने ने भी लौकिक तरीके से ही संताने उत्पन्न की है उन्होंने भी कोई अलौकिक कर्त्तव्य करके नहीं दिखाया फिर जगदीश के मस्तिष्क में यह अलौकिकता का चित्र कहां से उभरा। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये पुरी गये हों और वहां अपने नाम के मन्दिर में जो चित्र चारों तरफ बने हैं उनमें जो अलौकिक कर्त्तव्यों का प्रदर्शन किया गया है। उन्हें देखकर इनके अन्दर एक प्रेरणा जागृत हुई हो कि इस मृत प्राय संस्कृति को मैं पुन: क्यों न जागृत करूं। क्योंकि हमारे परमपिता परमात्मा दादा लेखराज ने तो लौकिक रासलीला का ही प्रतिपादन किया है और अब मैं इस अलौकिक संस्कृति का बीजारोपण कर इसे पल्लवित कर अपने दादा के कार्य को और गति दूँ। दादा द्वारा निर्मित भूमि (ब्रह्माकुमारी) में उर्वरक शक्ति ज्यादा होने से बीज जल्दी अंकुरित होकर पल्लवित हो जायेगा।

पृष्ठ ६– पर लिखते हैं कि कुछ लोग कहते हैं कि गृहस्थाश्रम में तो काम विकार की छुट्टी है। वे कहते हैं कि अभी तो पवित्र रहने की हमारी अवस्था ही नहीं है अभी तो इस विकार को भोगना गृहस्थ धर्म है। यह तो निभाना ही है वरना शादी करने और गृहस्थ बनने का कोई अर्थ ही नहीं है। गृहस्थ में भोग करने के लिए ही तो हमारे धर्म शास्त्रों और महात्माओं की आज्ञा है। हम दूसरी नारियों के प्रति कुदृष्टि का विचार नहीं रखते।

वास्तव में इस प्रकार की विचारधारा ही गलत है क्योंकि जिस गृहस्थ में काम भोग है उसे तो आश्रम की संज्ञा हम दे ही नहीं सकते कारण कि आश्रम पवित्र स्थान का नाम है। अत: लोगों की अज्ञानता और उनकी अपवित्रता के कारण ही घर अलग और आश्रम अलग बन गये हैं।

समीक्षा– इन अक्ल के कोल्हुओं को यह कैसे समझाया जाय कि आश्रम चार होते है ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासी ये जहां भी रहते हैं उसी का नाम घर है। जैसे ब्रह्मचर्य आश्रम ब्रह्मचारी पैदा होकर २५ वर्षों

की आयु तक गृहस्थ के घर में ही रहता है। वानप्रस्थ भी गृहस्थ कार्यों से निवृत्त होकर अलग घर में रहकर स्वाध्याय करता है। सन्यासी परिव्राजक होकर किसी न किसी गृहस्थ के घर में ही आश्रय लेता है। जहां आश्रय लिया जाय उसे आश्रम कहते हैं जहां रहा जाय उसे घर कहते हैं ये दोनों एक ही अर्थ के बोधक हैं। इन आश्रमों में गृहस्थ आश्रम ही श्रेष्ठ आश्रम है क्योंकि तीनों आश्रमों का जन्मदाता और पालनकर्त्ता यही है। इसके न होने से कोई आश्रम रह ही नहीं सकते। केवल विवाह कर लेने का नाम गृहस्थ नहीं है। माता पिता बनने पर ही गृहस्थ कहलाता है और बगैर काम भोग के माता पिता बना नहीं जा सकता।

पृष्ठ ९ – पर लिखते हैं कि आज धर्मपति और धर्मपत्नी के बीच से धर्म का संबंध टूट गया है और दोनों एक दूसरे को धर्म भ्रष्ट और पतित करने के लिए ही साथी बने हुए हैं। आज तो पति पत्नी एक दूसरे पर काम का कुठाराघात करके एक दूसरे को लहु लुहान करते हैं और इस प्रकार घोर हिंसा करके आदि मध्य अन्त दु:ख के भागी बनते हैं।

समीक्षा– काम ही एक ऐसा सूत्र है जो दम्पत्ति जीवन में रस घोलता है और वहीं दोनों में धर्म को संजोये रखता है। दोनों एक दूसरे से धर्म भ्रष्ट तब होते हैं जब काम शक्ति का अभाव होता है। काम ही एक ऐसी शक्ति है जो एक दूसरे को आकर्षित करती है और ईश्वरीय नियमानुसार सृष्टि की वृद्धि करती है परन्तु जगदीश जी पति पत्नी के रमण को धर्म भ्रष्ट और पतित मानते हैं। इससे तो यही सिद्ध हुआ कि जगदीश और उनकी संस्था की सभी ब्रह्मकुमारी धर्म भ्रष्ट और पतित लोगों की सन्तानें हैं क्योंकि ये सभी संभोग से पैदा हुई हैं। आसमान से तो टपकी नहीं है। धर्म भ्रष्ट और पतितों की सन्तानें भी धर्मभ्रष्ट और पतित ही होगी।

इसलिये ये पूरी संस्था धर्म भ्रष्ट और पतित है इस संस्था के संस्थापक दादा लेखराज जिन्हें ये परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं उन्होंने अपनी पत्नी को काम कुठार से लहु लुहान कर के ही नारायण आदि सन्तानों को पैदा किया है। जगदीश के कथनानुसार ये आदि मध्य और अन्त में दु:ख योनि नर्क में गये हैं आज तक तो ऐसा न देखा गया और न सुना ही गया कि पति के रमण करने से पत्नी लहु लुहान हो जाय। ऐसा जरूर सुना

गया है कि जब कोई कामान्ध प्रौढ पुरूष किसी नाबालिक से बलात्कार करता है तब वह नाबालिक लहु लुहान हो जाती है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि जगदीश जी ने यहां अपने अनुभव को ही उद्धृत किया है।

पृष्ठ १६– क्या परमात्मा सर्वव्यापक है ?

किसी वस्तु को प्रत्यक्ष तभी देखा जा सकता है जब दर्शक और दृश्य वस्तु के बीच खाली स्थान हो। यदि दोनों के बीच खाली स्थान ही न हो तब तो देखने की क्रिया हो ही नहीं सकती। अत: यदि परमात्मा को सर्वव्यापक माना जाय तब तो परमात्मा का दिव्य प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार हो ही नहीं सकता क्योंकि परमात्मा और आत्मा के बीच कोई रिक्त स्थान न होने से देखने की अन्य कोई भी क्रिया हो ही नहीं सकती है। क्रिया होती ही तब है जब कोई खाली जगह हो। यदि परमात्मा सर्वव्यापक हो तो वह भी हम को देख नहीं सकता।

समीक्षा– इन्होंने ईश्वर की सर्वव्यापकता को न मानने में जो हेतु दिये हैं वह इनके दुराग्रह से प्रेरित अज्ञानता को ही दर्शाता है। ईश्वर कोई भौतिक वस्तु तो है नहीं जो आंखों से देखी जा सके। वह तो अभौतिक है इन्द्रियों से परे हैं। आंख तो केवल रूपवान वस्तु को ही देख पाती है। अरूपवान् वस्तु को नहीं। जैसे वायु शब्द गंध,स्वाद, विद्युत, आदि को नहीं देख सकती जब कि न ये सब भौतिक हैं,तब अभौतिक को देखने का प्रश्न ही नहीं उठता। इन्द्रियों के द्वारा ईश्वर का प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार मानना तो उन्मादियों का काम है। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त हर ज्ञान यथार्थ नहीं होता। जैसे सांप में रस्सी और रस्सी में सांप का ज्ञान। इसीलिये इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान का निरीक्षण मन करता है और मन द्वारा किये गये निरीक्षण की जांच बुद्धि करती है और बुद्धि द्वारा की गई जांच का विश्लेषण तत्व ज्ञान करता है। वही ज्ञान उन्नति के मार्ग को प्रस्तुत करता है। दर्शक और द्रष्टव्य वस्तु के बीच खाली स्थान का होना आवश्यक है। यह नियम केवल स्थूल वस्तुओं पर ही लागू होता है। सूक्ष्म पर नहीं। खाली उसे कहते हैं जहां कुछ भी न हो। संसार में कोई जगह ऐसी नहीं है जो खाली हो,हर जगह कुछ न कुछ है। जैसे वायु विद्युत गैसादि स्थूल आंख से देखकर हम जिस जगह को खाली कहते हैं। वह खाली नहीं होती। जैसे की छड को देखकर हम कहते हैं यह ठोस है इसमें कोई जगह खाली नहीं है, परन्तु

अग्नि उसमें प्रवेश कर जाती है। उसके लिये उसमें जगह खाली थी। सूक्ष्म वस्तु स्थूल में प्रवेश कर जगह नहीं घेरती और आवरण ही करती है। सूक्ष्म समान रूप से व्यापक भी होता है। जैसे विद्युत् बी.बी.सी.लंदन से रेडियो प्रसारण होता है, तब विश्व के सारे देश एक ही समय में सभी उसे सुनते हैं। इससे यही सिद्ध हुआ कि जो विद्युत् लंदन में है वही सारे विश्व में व्यापक है। जब तक एक भौतिक पदार्थ अपनी व्यापकता को इस प्रकार प्रदर्शित कर रहा है तब विद्युत् से भी सूक्ष्म अभौतिक ईश्वर की व्यापकता पर सन्देह करना अक्ल के दिवालियेपन का ही सबूत है। सबसे पहली बात तो यह है कि तुम लोग ईश्वर की चर्चा करने के अधिकारी ही नहीं हो क्योंकि महर्षि व्यास ने वेदान्त दर्शन के प्रथम सूत्र में लिखा है। अथातो ब्रह्म जिज्ञासा इस सूत्र का भाष्य करते हुए भाष्यकार ने लिखा है कि ब्रह्म को जानने की इच्छा वही कर सकता है जिसने यम नियम का यथावत् पालन किया हो। पहली कक्षा का छात्र यदि मैट्रिक के कोर्स की चर्चा करे तो यह उसकी अनाधिकार चेष्टा ही होगी। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी किसी साधारण व्यक्ति को ईश्वर नहीं कहेगा। परन्तु तुम लोगों ने लेखराज जैसे विद्या से हीन साधारण व्यक्ति को ईश्वर कह कर मूर्खता की भी तौहीन की है। केवल निजी स्वार्थ के लिये। **''स्वार्थी किं न करोति पापम् ''** वह कौन सा पाप है जिसे स्वार्थी न कर सकता हो।

त्रयोदश परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार नामक पुस्तक के पृष्ठ १८५ में लिखते हैं कि प्राय: लोग मानते हैं कि गीता ज्ञान श्री कृष्ण ने युद्ध के मैदान में अर्जुन को दिया था। परन्तु यदि ज्ञान की दृष्टि से अर्थात् आत्मिक दृष्टि से देखा जाय और विवेक का प्रयोग किया जाय तथा श्री मद् भागवत गीता के महावाक्यों पर विचार मन्थन भी किया जाय तो यह मान्यता ठीक नहीं मालूम होती, बल्कि मनुष्य इसी निर्णय पर पहुंचता है कि गीता ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा दिया था और कि भगवान ने कोरवों -पाण्डवों के बीच कोई हिंसक युद्ध कराया ही नहीं।

समीक्षा- ब्रह्माकुमारियों में अपने आप को महान् विद्वान् सिद्ध करने व उन्हें आकर्षित करने के लिये जगदीश ने जो वेशिर पैर की गप्पों का सृजन किया है। इससे भले ही यह जगदीश चन्द कृष्णचन्द बनकर रासलीला खेल ले परन्तु यह जिस भी पढे-लिखे के हाथ पडेगी वही इनकी बुद्धि पर तरस खाकर कहेगा कि क्यों विद्या को बदनाम कर मनुष्यता को कलंकित कर रहे हो। इनका कथन है कि गीता का ज्ञान अर्जुन को नहीं दिया था और न महाभारत युद्ध ही हुआ था। गीता ज्ञान तो परमपिता महात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा दिया था। अब प्रश्न यह है कि मनुष्यों के पिता तो शिव हुए तो प्रजापिता ब्रह्मा किसका पिता है, पशुओं का या मनुष्यों का, प्रजा तो मनुष्यों को ही कहते हैं। तब मनुष्यों के दो पिता हो गये। शिव और ब्रह्मा और तीसरा पिता वो जिसने पैदा कर पाला पोसा, अब इनके हिसाब से पिता तीन और माता एक, यह सृष्टि मैथुनी है। रजवीर्य के संयोग हुये वगैर सन्तान होती ही नहीं और रजवीर्य का संयोग वगैर मैथुन के हो ही नहीं सकता। प्यारे जगदीशचन्द तुमने किसी न किसी माता के गर्भ से ही जन्म लिया होगा और गर्भ वगैर मैथुन के रह ही नहीं सकता। गर्भ के लिये कोई न कोई वीर्य दाता होता है और उस वीर्य दाता को ही पिता कहा जाता है। परन्तु तुम्हारे तो तीन पिता हैं तो क्या तीनों वीर्यदाता हैं या एक है, यदि एक है तो दो को पिता कहने का औचित्य क्या है ? उत्तर दें। तुमने तो यह लिखा कि गीता ज्ञान परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा दिया। अब

प्रश्न यह है कि प्रजापिता ब्रह्मा कौन है और उसने यह ज्ञान किसको दिया कब और कहां। तुमने इसी पुस्तक के पृष्ठ ३८४ में लिखा कि शिव ने कलियुग के अन्त में प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर दिया और उसके बाद से सतयुग लग गया। ऐतिहासिक गणित के हिसाब से एक चतुर्युगी की आयु ४३२०००० वर्षों की होती है। और तुम्हारे द्वारा कल्पित आयु ४८०० वर्ष होती है। यदि हम तुम्हारी कल्पित आयु को ही मान लें तो प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज) को गीता ज्ञान दिये जाने के बाद से सतयुग लगा फिर त्रेता फिर द्वापर लगा फिर कलियुग लगा और तुम्हारे हिसाब से अब कलियुग भी समाप्त हो रहा है। कितने आश्चर्य की बात है कि ४८०० वर्षों में तुम्हारे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा दिया गया गीता ज्ञान किसी भी व्यक्ति को याद नहीं आ रहा किसी भी विद्वान् ने एक शब्द भी नहीं लिखा बल्कि कृष्ण द्वारा दिया गया गीता ज्ञान ५००० वर्ष बीत जाने पर भी जन-जन में अभी भी व्याप्त है। इनका कथन है कि दादा लेखराज ही प्रजापिता ब्रह्मा है शिव ने इन्हीं को पूर्व कलियुग के अन्त में गीता ज्ञान दिया था और इन्हीं का नाम कृष्ण था। यह दुनिया जानती है कि श्री कृष्ण द्वापर के अन्त में हुये थे और उनकी मृत्यु के १० वर्ष बाद से कलियुग लगा था जिसकी संवत् सार आज भी पंचागों में अंकित रहती है। परन्तु जिसने लज्जा को तिलांजली दे दी हो, वह सब कुछ कह सकता है। इन्होंने इसी पुस्तक के पृष्ठ १८६ में गीता के अध्याय २ के २२ वे श्लोक के एक शब्द को उद्धृत कर अपने पक्ष में प्रमाण रूप प्रस्तुत किया है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय। नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ॥
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है। इनके प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज) ने पूर्व कलियुग के अन्त में शरीर त्यागा गीता के अनुसार इनको दूसरा शरीर अवश्य मिला होगा। इनके शरीर त्यागने के बाद सतयुग, त्रेता, द्वापर और पूरा कलयुग निकल गया तब इन्हें मनुष्य का शरीर मिला। इससे यह सिद्ध है कि ये इन चारों में पशु-पक्षियों में कुत्ते, शुकर, कौवा, चमगीदड, उल्लू आदि योनियों में अपने

किए हुए पाप कर्मों का फल भोगते रहे कर्म फल शेष होने पर इन्हें फिर से मनुष्य शरीर मिला, और इस जन्म में किये हुए कर्मों को देखते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब इन्हें मनुष्य योनि मिलना दुर्लभ ही है।

पृष्ठ १८६– आप देखते हैं कि आज श्री मद्भगवद् गीता नाम से प्रकाशित जो पुस्तक मिलती है उनमें तो श्री कृष्ण का शारीरिक रूप चित्रित होता है और लोग उसे ही गीता का भगवान् मानते हैं। गीता में भगवान् का ज्योतिर्मय रूप तो कहीं भी चित्रित नहीं होता और शारीरिक रूप जो भगवान् से भिन्न है अर्थात् जो कि भगवान् नहीं है। बल्कि जड प्रकृतिकृत तथा नश्वर है उसे ही चित्रित करके उसे भगवान् बताया गया है। विवेक से स्पष्ट है कि यह गलत चीज है। स्वयं भगवान् ने भी गीता में कहा है कि मुझे अव्यक्त और अविनाशी सत्ता को न पहिचान कर जो मुझे अव्यक्त परमात्मा के व्यक्त भाव को मानते हैं वे बुद्धिहीन पुरूष हैं वे मेरे मनुष्य तन को देखते हैं महेश्वर को नहीं जानते।

समीक्षा– प्यारे जगदीश पढे–लिखे होने पर भी तुम्हारी बुद्धि इतनी ज्यादा भ्रष्ट क्यों है इसका कुछ न कुछ कारण तो होना ही चाहिये क्योंकि वगैर कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। बुद्धि भ्रष्ट होने का कारण तुलसी **दास जी ने इस प्रकार लिखा है** ---

इम कुपन्थ पग देत खगेसा। रहे न तेज तनु बुद्धि लव लेसा॥

जिसके पैर बुरे रास्ते की ओर बढ जाते हैं तो उसकी बुद्धि का विनाश हो जाता है। और बुद्धि के विनाश हो जाने से वह व्यक्ति आरत हो जाता है। तुलसी ने लिखा– रहत न आरत के चित चेतू। आरत हुये व्यक्ति का मस्तिष्क विक्षिप्त हो जाता है इसलिये कहा कि आरत काह न करे कुकर्मू। वह कौन सा ऐसा कुकर्म है जिसे आरत व्यक्ति न कर सकता हो। तुमने लिखा कि आज जो गीता प्रकाशित मिलती है उसमें श्रीकृष्ण का शारीरिक रूप चित्रित रहता है तो क्या इससे पहले जो गीता प्रकाशित होती थी उसमें लेखराज का चित्र प्रकाशित होता था। अरे मदन मस्त जी जिसने गीता कही और जिसने सुनी उन्हीं के चित्र तो प्रकाशित होंगे और चित्र तो शरीर का ही होता है ज्योतिर्मय आत्मा का नहीं। शारीरिक रूप से जो कि भगवान् से भिन्न है भगवान् नहीं बल्कि जड तथा नश्वर है उसे ही चित्रित कर

भगवान् बताया गया है विवेक से यह गलत है। इसे विवेक से गलत कहना विवेक हीनता है। जो बनता है वही बिगडता है। आत्मा अव्यक्त है इसलिए न बनता है न बिगडता है शरीर व्यक्त है इसलिये बनता बिगडता है। जो बनता बिगडता है चित्र भी उसी का बनता है। श्री कृष्ण भगवान् थे इसलिये उनका चित्र भी भगवान् का चित्र कहलायेगा। गीता में श्री कृष्ण का यही तो कहना है कि मनुष्य शरीर में जो आत्मा है वह अव्यक्त है उसे व्यक्त कहना मूर्खता है। गीता वैष्णव सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ है उसमें श्री कृष्ण जी को विष्णु अवतार मानकर ही उसकी संरचना की गई है। उसमें तुम्हारे लिंग स्वरूप शिव का और प्रजापिता ब्रह्मा (दादा लेखराज) का नामों निशान नहीं है। तुमने तो इस शेर को ही चरितार्थ किया है।

देख अकद सरइया, उन्हें अंगूर की सूझी।
अन्धे को अन्धेरे में दूर की सूझी॥

तुमने श्रीमद्भगवत् गीता के कुछ शब्दों को उसके श्लोकों से उद्धृत कर यह सिद्ध करना चाहा है कि गीता शिव की कही हुई है कृष्ण की नहीं और चालाकी यह की है कि पूरे श्लोक नहीं लिखे तुमने जो लिखा है वे निम्न हैं–गीता अ.२ श्लोक २२/२-२५/३-२८/७-२४/८-९/८-४/८-९/८-१०/८-१२/८-२१/९-४/९-११/१०-१२/११-३/१३-३३/ इन श्लोकों में कहीं भी तुम्हारे शिव या प्रजापति ब्रह्मा की गन्ध भी नहीं है। गीता ८-१/

किं तद ब्रह्मकिमध्यातं किं कर्म पुरूषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते॥

अर्जुन ने कहा– हे पुरूषोत्तम। यह ब्रह्मा क्या है ? अध्यात्म क्या है ?कर्म क्या है ? अधिभुत् नाम से क्या कहा गया है और अधिदेव किसको कहते हैं। **गीता ८-२–** हे मधूसूदन यहां अधियज्ञ कौन है ? और वह इस शरीर में कैसे हैं ? अर्जुनके इन प्रश्नों का उत्तर भगवान् कृष्ण ने क्रमश: देते हुये अन्त में कहा कि।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
य: प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥

जो ओम् इस एक अक्षर रूप ब्रह्मा को उच्चारण करता हुआ और उसके

अर्थ रूप निर्गुण ब्रह्मा का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है वह पुरूष परमगति को प्राप्त होता है.। ८-१३ ॥

पृष्ठ १८८- अब प्रश्न उठता है कि गीता के भगवान् का नाम क्या है ? शरीर आत्मा के वस्त्रों के समान है । अब नाम के बारे में निर्णय करते समय ध्यान देने योग्य बात यह है कि वस्त्र का जो नाम होता है पहनने वाले का वही नाम नहीं होता । सोचने की बात है कि कृष्ण नाम किसका हो सकता है ? शरीर का या आत्मा का यदि कृष्ण संज्ञावाचक नाम है तब भी वह भगवान् (परमेश्वर) का नाम नहीं हो सकता क्योंकि भगवान् के तो सभी नाम गुणवाचक अर्थात् कर्त्तव्यवाचक हैं। यदि कृष्ण गुणवाचक नाम है तो भी भगवान् का नाम नहीं हो सकता क्योंकि कृष्ण का रंग साँवला था।

समीक्षा- जगदीश जी मनुष्य उसे कहते हैं जो मननशील हो और ज्ञान हीन विचार वाले को पशु कहते हैं। जीव का कोई नाम रूप नहीं होता । अब मै तुम्हीं से पूछना चाहता हूँ कि तुम और तुम्हारा शरीर अलग-अलग है अब यह बतलाओ कि जगदीश नाम किसका है। शरीर का या आत्मा का । यदि तुम्हारा हाथ कट जाय तो यही कहा जायेगा कि जगदीश का हाथ कट गया,यह तो नहीं कहा जायेगा कि जगदीश के शरीर का हाथ कटा। इसलिये नाम जीवात्मा का ही होता है मुख्य नाम ना तो गुणवाचक होता है और न कर्मवाचक यह तो पहिचान वाचक होता है। नाम पैदा होने के ११ दिन बाद रख दिया जाता है। तब उस बालक में ना कोई गुण होता है ना कोई कर्म। मूल नाम के शब्दों का अर्थ भी नहीं लगाया जाता जैसे तुम्हारा नाम जगदीश है ,इसका अर्थ होगा सारे संसार का मालिक अब तुम्हीं सोचो कि इस अर्थ के अनुसार तुममें गुण कर्म है क्या ? तुम्हारा प्रश्न है कि गीता में भगवान् का नाम क्या है ? कितने आश्चर्य की बात है तुम्हारे स्थूल बुद्धि में इतनी सरल सी बात भी नहीं घुसती। गीता जिसने अर्जुन के प्रति कही वही उसका भगवान् कहलाता है। श्री कृष्ण अर्जुन संवाद का ही नाम लोगों ने गीता रखा है। रही बात ईश्वर की तो गीता अध्याय ८ श्लोक १३ में स्वयं भगवान् श्री कृष्ण जी कहते हैं कि ओम् इस एक अक्षर रूप ब्रह्मा को जो जपता है वही परमगति को पाता है।

चतुर्दश परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार नामक पुस्तक के पृष्ठ २८५ में लिखते हैं कि– श्री कृष्ण पूर्व जन्म में प्रजापिता ब्रह्मा थे। हम यह स्पष्ट कह सकते हैं कि कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ में परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर गीता ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दी थी।

समीक्षा– इस जन्म में तो श्री कृष्ण के माता पिता देवकी और वासुदेव थे। इसके पूर्व जन्म में इनके माता पिता कौन थे जब ये प्रजापिता ब्रह्मा थे। यदि तुममें जरा भी मनुष्यता है तो उत्तर दो। इनका कथन है कि परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हुआ। अवतार तो एक ही तरीके से होते हैं। चाहे शिव का हो या विष्णु का या साधारण जीव का। विष्णु देवकी और कौशिल्या के गर्भ में अवतरित होकर राम और कृष्ण के नाम में प्रगट हुए। वगैर सम्भोग के कोई गर्भ में आता नहीं। अब यह बतलाओ कि तुम्हारे प्रजापिता ब्रह्मा के साथ किसने संभोग कर गर्भ धारण कराया और जब शिव ने प्रगट होकर गीता ज्ञान का राजयोग बताया तब उसका नाम क्या था और उस ज्ञान को सुना किसने गीता तो प्रश्न उत्तर के रूप में है– अर्जुन के प्रश्नों का उत्तर कृष्ण देते हैं तुम्हारे शिव से कौन प्रश्न करता था। पृष्ठ १७९– गीता का आदिवक्ता देवकीनन्दन श्री कृष्ण को कैसे माना जा सकता है। कृष्ण तो विष्णु के साकार रूप हैं। परन्तु भगवान् शब्द तो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता का वाचक है। जिसे केशव (क= ब्रह्मा=इ=विष्णु, ईश=शंकर को भी वश में रखकर उससे कार्य करायें)

समीक्षा– देवकी नन्दन श्री कृष्ण गीता के आदिवक्ता हैं तुम्हारे मानने न मानने से सत्य नहीं झुठलाया जा सकता है। परन्तु तुम्हारे जैसे अक्ल के अन्धे को कौन समझा सकता है। तुम्हारे शिर में तो लेखराज का भूत सवार है हर जगह तुम्हें वही दिखता है इसका कारण है कुमारियों का मोह जाल जिसने तुम्हें अन्धा बना रखा है। तुमने स्वयं लिखा कि कृष्ण तो विष्णु के साकार रूप हैं। यह दुनिया जानती है कि गीता वैष्णव सम्प्रदाय का ग्रन्थ

है। शैव सम्प्रदाय का नहीं। भारत में दो ही सम्प्रदाय पुराने हैं– वैष्णव और शैव। इन दोनों की सम्प्रदायों की अब अनेकों शाखायें हो गई हैं। गीता में शैव सम्प्रदाय की गन्ध भी नहीं है। तुमने लिखा कि भगवान् शब्द तो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता का वाचक नाम है। जब तुमने देखा कि गीता में कहीं भी शिव का नाम नहीं है और अनेकों जगह श्री भगवानुवाच ही लिखा है तब तुमने अपने दुराग्रह को सिद्ध करने के लिये भगवान् शब्द का सहारा लिया कि हमारे परमपिता परमात्मा शिव (दादा लेखराज) ही भगवान् है उन्हीं ने गीता कही है। इसीलिये भगवानुवाच लिखा है। अब मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि भगवान् शब्द के वाचक तुम्हारे शिव ने ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की रचना में कौन-२ सी वस्तुओं का प्रयोग किया था फिर जिस तरह यहोवा ने सडी मिट्टी से आदम को बनाया था परन्तु तुम्हारा तो कथन है कि परमात्मा शिव निराकार है जब उसे बोलना होता है तब वह किसी मनुष्य के तन में प्रवेश कर उसके मुंह से बोलता है और मनुष्य का नाम प्रजापिता ब्रह्मा रख देता है तब क्या ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की रचना दादा लेखराज ने की है। भगवान् शब्द संज्ञावाचक नहीं है वह गुणवाचक और उपाधि एवं आदर सूचक शब्द है। जिस मनुष्य में छै गुण होते हैं उसे भगवान् कहा जाता है। बल, विद्या, तप, वैराग्य ओज, और ऐश्वर्य इन गुणों से युक्त पुरूष भगवान् कहलाता है और जो सम्मानित होता है उसे भी भगवान् कहा जाता है। जैसे राम भगवान्, कृष्ण बलराम, व्यास, नारद, बुद्ध, महावीर, गणेश, हनुमान, विष्णु, शंकर आदि के नाम के साथ भगवान् लगा दिया जाता है। भगवान् का अर्थ ईश्वर नहीं होता। व्यवहार में भी एक भक्त दूसरे भक्त से कहता है आओ बैठो भगवान्। श्री कृष्ण को केशव इसलिये कहने लगे कि उन्होंने केशी नाम के असुर का वध किया था। तुमने कृष्ण के अनेक नामों पर सन्देह प्रकट किया है। तुमने स्वयं स्वीकारा है कि श्री कृष्ण विष्णु के अवतार थे। केवल विष्णु के ही हजार नाम है देखना चाहो तो विष्णु सहस्त्र नाम की पुस्तक पढ लेना तो फिर कृष्ण के अनेकों नाम होने में सन्देह करना मूर्खता ही है। तुमने अपने ज्ञान का परिचय तो केशव शब्द का अर्थ क=इ=ईश लिखकर ही दे दिया है।

पृष्ठ ४३३– हमारा उद्देश्य शब्दकोष व्याकरण या निरूक्त इत्यादि को लेकर गीता की कोई टीका लिखना नहीं है। हम में न तो शब्द शास्त्र की विद्वता है न ही गीता शास्त्र का पाण्डित्य है। हमने तो सेवार्थ ही इस विषय पर लेखनी उठाई है। करूणासिन्धु ज्योतिबिन्दु परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा हमें जो ज्ञान रूपी अमृत अथवा संजीवनी प्रदान की है। इसमें हमारा अपना कुछ भी नहीं है।

समीक्षा– प्यारे जगदीश तुमने यह स्वीकार किया है कि इस लेख में मेरा कुछ भी नहीं है जो कुछ भी मैंने लिखा है वह दादा लेखराज का दिया हुआ ज्ञान है जिन्हें हम प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं, और यह भी स्वीकारा है कि हममे व्याकरण और शब्द शास्त्र का बिल्कुल ज्ञान नहीं है और न ही गीता शास्त्र का पाण्डित्य ही है। जब तुम व्याकरण शास्त्र से अनभिज्ञ हो और गीता का भी तुम में पाण्डित्य नहीं है तो फिर तुमने अपनी लिखी पुस्तक का नाम गीता का सच्चा स्वरूप कैसे लिख दिया क्या दुनियां को धोखा देने के लिये ? तुमने जीवन में शायद पहली बार सत्य बोला है कि मुझमें व्याकरण शब्द शास्त्र का ज्ञान नहीं है। तुम्हारे इस कथन की पुष्टि तुम्हारी लिखी पुस्तक को देखकर ही हो जाती है कि तुम विवेक–हीन केवल टेप रिकार्डर के कैसिट मात्र हो। लेखराज ने जो भी वे शिर पैर की बातें कही वही तुममें टेप हो गई और वैसे ही बजने लगे क्यों कि टेप में तो सत्यासत्य के निर्णय करने की क्षमता होती ही नहीं है।

पृष्ठ २८७– आज श्री कृष्ण के विषय में भक्त लोग यह नहीं सोचते कि जब कहावत ही है कि ज्ञान द्वारा नर श्री नारायण पद प्राप्त करता है तो अवश्य ही श्री कृष्ण भी नारायण पद प्राप्त करने से पहले अर्थात् पूर्व जन्म में साधारण नर रहे होंगे। इसका यह अर्थ हुआ कि श्री कृष्ण ने पूर्व जन्म में गीता ज्ञान लिया होगा। तभी उसी ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता होने के कारण ही वे ब्रह्मा कहलाये पुनश्च जब ब्रह्मा सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी थे तो अवश्य ही वे ज्ञान द्वारा देवों में शिरोमणि देव अर्थात् श्री नारायण अर्थात् श्री कृष्ण पद को प्राप्त हुए होंगे। इससे ब्रह्मा और नारायण का पूर्वापर तादात्म्य स्पष्ट है। इससे यह भी स्पष्ट है कि ब्रह्मा द्वारा ही परमात्मा ने गीता ज्ञान दिया था। अब यदि लोगों को यह सत्यता मालूम हो जाए कि वर्तमान समय ही कलियुग

के अन्त और सतयुग के आदि का संगम समय है। जब की परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुन: गीता ज्ञान एवं योग की शिक्षा देते रहे हैं।

समीक्षा– स्वार्थी किं न करोति पापम्। स्वार्थी मनुष्य कौन सा ऐसा पाप है जिसे वह न कर सकता हो। दुनियां में सबसे बडा पाप झूठ बोलना है। तुलसीदास जी ने लिखा है कि –

नहि असत्य सम पातक पुन्जा।
गिर सम होई कि कोटिक गुन्जा॥

तुम्हारा कथन है कि ज्ञान से नर नारायण बन जाता है। दुनिया में तो करोडों लोग ज्ञानी हुए हैं,तो क्या सभी नारायण बन गये और उनकी पत्नी लक्ष्मी बन गई। प्रलय के समय जब विष्णु क्षीर सागर में शेष नाग पर शयन करते हैं तब उन्हें नारायण कहा जाता है क्योंकि नर का अर्थ जल और अयण का अर्थ निवास जिसका निवास पानी में हो वह नारायण कहलाता है। अब यह बतलाओ कि क्या सभी ज्ञानियों का वास पानी में रहता है और सभी शेष नाग पर सोते हैं। तुमने लिखा कि श्री कृष्ण पूर्वजन्म में साधारण नर रहे होंगे। यह दिवा स्वप्न तुम्हें कैसे आ गया कि श्री कृष्ण पूर्व जन्म में नर थे यदि नर थे तो जरूर किसी माता पिता के पुत्र रहे होंगे और उनका कुछ नाम भी रहा होगा जैसे इस जन्म में माता देवकी पिता वासुदेव और नाम कृष्ण है। प्यारे जगदीश गप्प लिखने के लिये भी अक्ल की जरूरत पडती है परन्तु तुम तो अक्ल के महान् त्यागी हो। आगे लिखा कि कृष्ण ने पूर्वजन्म में गीता ज्ञान लिया। जब इन्होंने पूर्वजन्म में ही गीता ज्ञान ले लिया था तो लोगों को क्यों नहीं बतलाया अब इस जन्म में क्या जरूरत पड गई जो उन्होंने लोगों को बताया। वह कौन सा गीता ज्ञान है जिसे कृष्ण ने लिया था। क्या बता सकते हो तुम्हारी पुरी संस्था को मेरी चुनौती है कि गीता ज्ञान बताये जो पूर्व जन्म में कृष्ण ने लिखा था जो गीता भारत और विदेशों में प्रचारित है वह अर्जुन के विमोहित होने परर कृष्ण ने जो कुछ कहा,उस कृष्ण अर्जुन संवाद का नाम गीता है और दूसरी कोई गीता नहीं है और तुम भी उसी गीता के यदाकदा श्लोंको को प्रस्तुत कर अर्थ का अनर्थ करते रहते हो। जबकि तुम्हारा कथन है कि शिव ने

लेखराज के तन में प्रविष्ट होकर गीता ज्ञान दिया तो उस गीता ज्ञान को क्यों नहीं लिखते प्रचलित गीता को ही जगहजगह क्यों उद्‌धृत करते हो। तब तो यही कहना पडेगा कि तुम्हारे शिव ने कृष्ण अर्जुन संवाद वाली गीता ही लेखराज को बतलाई है तब तो यही कहना पडेगा कि तुम्हारे परमपिता परमात्मा शिव से ज्यादा मूर्ख और कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि परमधाम से आकर वही बातें बतलाई जिसे साधारण लोग भी जानते हैं आगे लिखा कि गीता ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही कृष्ण ब्रह्मा कहलाये। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि जिस तरह से लोग अदालत में जाकर कसम खाकर कहते हैं कि मैं सत्य के सिवाय और कुछ भी नहीं कहूंगा ठीक उसी तरह जगदीश ने भी लेखराज के सामने यह कसम खाई है कि मैं झूठ के सिवाय सत्य कभी नहीं लिखूंगा। इसी प्रतिज्ञा के पालन को अपने लेखों में करते आ रहे हैं। मिथ्यावादी यह बतलाओ कि नारायण और कृष्ण पद को प्राप्त किसने किया उसका नाम क्या था ?दुनिया यह जानती है कि वासुदेव नन्दन का नाम कृष्ण है जो पैदा होने पर रखा गया था कृष्ण कोई पद नहीं नाम है। अब लोगों को मालुम हो जाय कि जगदीश झूठ के सिवाय और कुछ नहीं लिखता तो इनकी लिखी सारी पुस्तकों का अन्तिम संस्कार कर देंगे। तुमने पहिले यह लिखा था कि परमपिता शिव जिस मनुष्य के तन में प्रविष्ट होते हैं उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रख देते हैं और अब लिख रहे हो कि परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुन: गीता ज्ञान दिया। तुम्हारा प्रजापिता ब्रह्मा पहले दिये हुये ज्ञान को कैसे भूल गया कि शिव को दुबारा वही ज्ञान देना पडा ऐसे भूलक्कड को शिव ने दुबारा ज्ञान क्यों दिया क्या उसे दुनियां में और कोई नहीं मिला।

पञ्चदश परिच्छेद

प्रिय पाठकों,

ब्रह्माकुमारी मत तो पाखण्ड रूपी प्याज है इसके जितने छिलके उतारते जाओ सभी में पाखण्ड नजर आयेगा इस प्याज के मैं १४ छिलके उतार कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर चूका हूँ अब १५ वां छिलका उतार कर अपने श्रम को विराम दे रहा हूँ और आशा करता हूँ कि विज्ञ पाठक इन छिलकों को देखकर प्याज के स्वरूप को समझ जायेगें।

इस पंद्रहवे परिच्छेद में मैं शठें शाठ्यं समाचरेत की नीति को अपना कर ही अपनी कलम को गति दे रहा हूँ। इनके मत की जितनी पुस्तकें मैंने पढीं हैं वह सभी जगदीश की ही लिखी हुई है। महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार नामक पुस्तक मन गढन्त और निराधार कल्पना करके लिखी गई है। ठीक उसी तरह की कल्पना का सहारा लेकर इनके परमपिता शिव और प्रजापिता ब्रह्मा का सच्चा स्वरूप और सार पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ अवलोकन करें।

बम्बई महानगर में एक शिव नाम के अन्तर्राष्ट्रीय तस्कर और सट्टेबाज व्यक्ति ने काफी धन अर्जित कर एक शिवकुमारी बाई नाम की महिला जो कि देह व्यापार में संलग्न महिलाओं की नायिका थी उससे अपनी घनिष्टता स्थापित कर ली और दोनों ने मिलकर अपनी योजनानुसार एक विशाल कोठी जो सात मन्जिल की थी उसे खरीद कर उसका आधुनिकीकरण कराकरऔर उसका नाम आनन्द भवन रखा और हर मन्जिल का अलग-२ नाम रखा गया और नाम के अनुरूप उस मन्जिल को सजाया गया हर मन्जिल वातानुकूल कर दी गई। पहली मन्जिल का नाम सत्संग भवन रखा गया इसमें प्रात: से रात्री ९ बजे तक कीर्तन भजन होते रहते थे। दूसरी मन्जिल का नाम साधना भवन रखा गया इसमें शिवकुमारियों को प्रशिक्षण दिया जाने लगा, तीसरी मन्जिल का नाम रास मण्डल रखा गया इसमें नृत्यकला आलिंगन आदि का कार्यक्रम होने लगा, चौथी मन्जिल का नाम राज योग और भोग रखा गया, पांचवी मन्जिल का नाम जन्नत या स्वर्ग रखा गया यहां पर हुरों और अप्सराओं की उसी प्रकार व्यवस्था रखी

गई जिस तरह से कुरान और पुराणों में वर्णित है। छठवीं मन्जिल का नाम वैकुण्ठ रखा गया जहां नारायण और लक्ष्मी के सदृश रहने की व्यवस्था की गई और सातवीं मन्जिल का नाम परमधाम रखा गया वहां केवल परमपिता शिव ही रहते थे। पहली मन्जिल के सत्संग भवन में स्त्री पुरूष सभी जा सकते थे। वहां की शिक्षित परिचारिकायें सभी आगन्तुकों का आदर सत्कार बडी ही शालीनता से करती थी। इस व्यवहार के कारण सत्संग में बहुत भीड होती थी। दूसरी मन्जिल में वे केवल समर्पित महिलायें ही जा सकती थीं। तीसरी मन्जिल में वे पुरूष जाते थे जिन्होंने एक दिन के लिये ५०० रू.का अनुदान दिया हो, राजयोग की अनुदान राशि १००० रू. प्रतिदिन थी और जन्नत या स्वर्ग में जाने की अनुदान राशि ५००० रू.प्रतिदिन थी और वैकुण्ठ का आनन्द लेने के लिये प्रतिमाह एक लाख रूपये थी। परमधाम में केवल अक्षत योनि शिवकुमारी ही आ सकती थी वहां परमपिता उनके तन में प्रविष्ट होकर गीता ज्ञान देते थे। गीता ज्ञान प्राप्त शिवकुमारी सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी और जगत माता जगदम्बा कहलाती थी। राजयोग और जन्नत में कार्यरत शिवकुमारियां प्रचार कार्य करती थीं। हर एक के पास कीमती कारें थीं जिनमें बैठकर वो लोग एयरपोर्ट रेल्वे स्टेशन, बडे होटलों एवं दूतावासों में जाकर अपना जाल बिछाती थी और रासमण्डल की शिवकुमारियां शहर के विविध प्रतिष्ठानों में प्रचार करती थीं यह है इनके परमपिता परमात्मा शिव का सच्चा स्वरूप और सार अब इनके प्रजापिता ब्रह्मा के सच्चे स्वरूप का अवलोकन करें।

सिन्ध हैदराबाद में कृपलानी परिवार में उत्पन्न खूबचन्द नाम का एक व्यक्ति जो गावों से गेहूँ खरीद कर शहर में फुटकर बेचता था वह गेहूँ के व्यापार के लिये बम्बई गया। वहां उसकी मुलाकात किशन बुधवानी के साथ हुई। किशन तस्कर शिवदादा के गेंग का प्रमुख कार्यकर्ता था। जब शिवदादा ने शिवकुमारी बाई के साथ मिलकर एक धार्मिक संस्था आनन्द भवन में खोल ली तब किशन को तस्करी की कमाई से २० प्रतिशत देने को कहकर उसे गेंग का दादा बना दिया था। किशन को एक ऐसे आदमी की जरूरत थी जो उसकी शर्तों के अनुसार करांची बन्दरगाह से डिलेवरी कुशलता पूर्वक ले सके। खूबचन्द से मुलाकात होते ही किशन की तेज

निगाहों ने उसके अन्दर छिपी प्रतिभा को पहचान लिया और खूबचन्द से प्रतिज्ञा पत्र भरवाकर अपने गुट में मिलाकर हैदराबाद में एक दुकान रत्नो की खोल दी नाम रखा लखीराम एण्ड सन्स फिर दूसरी दुकान करांची में खोल दी उसका नाम लेखराज एण्ड सन्स रखा और दूसरे जौहरियों से कम कीमत में रत्नों को बेचने से इनकी दूकान ज्यादा चलने लगी। लेखराज की कार्य कुशलता को देखकर किशन ने करांची गिरोह का दादा बना दिया तब से ये दादा लेखराज कहलाने लगे और किशन को अपना गुरू मान लिया। जब कभी किशन हैदराबाद या करांची आता तो लेखराज उसके स्वागत में हजारों रूपया खर्च कर देता, गुरूभक्ति का ऐसा प्रदर्शन करता की देखने वाले दंग रह जाते। किशन ने अपने प्रति लेखराज की निष्ठा को देखकर कहा कि तुम मेरे साथ बम्बई चलो मैं तुम्हें परमपिता परमात्मा शिव के वैभव का दिव्य दर्शन कराऊंगा। किशन ने लेखराज को आनन्द भवन की शिवकुमारी संस्था के छहों मन्जिल की विलांसिता का भरपूर आनन्द प्राप्त करा दिया। लेखराज ने कहा गुरूजी मेरे मन में एक प्रबल शंका उत्पन्न हो गई है कि शिवकुमारियां रतिक्रीडा में निमग्न होते हुये भी गर्भवती क्यों नहीं होती। किशन ने कहा परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दिये गये ज्ञान का पालन करने से वे लोग गर्भवती नहीं होती हैं। शिव ने इन्हें ज्ञान दिया है कि रजोदर्शन के अन्तिम दिन से सोलह दिनों तक रतिक्रीडा न करें इस समय को बडी सख्ती से पालन कराया जाता है। जिसने नियम का उल्लंघन किया उसे कठोर दण्ड दिया जाता है। इसलिये कोई भी शिवकुमारी गर्भवती नहीं होती है। लेखराज ने किशन के पैर पकडकर कहा गुरूदेव मैंने इस आनन्द की कल्पना कभी स्वप्न में भी नहीं की थी कि इस धरती पर भी ऐसा स्वर्गीय आनन्द प्राप्त हो सकता है जो आपकी कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है। अब दयाकर इस दास को परमपिता परमात्मा शिव के दर्शन और करा दो तो मेरा जीवन सफल हो जाय, किशन ने कहा कि मैं तुम्हारे सत्कार से इतना प्रभावित हूँ कि तुम्हें सब कुछ बता दूंगा। परन्तु शिव से मुलाकात करवा देना मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर है, क्योंकि शिव को हम लोगों ने निराकार लिंग स्वरूप तथा ज्योति स्वरूप घोषित कर चुके हैं। जब कि वे पहले हमारे गेंग के दादा थे। परमधाम में रहने वाला परमात्मा शिव कौन है

इस रहस्य को केवल मैं और शिवकुमारी बाई ही जानती हैं,या फिर वह शिवकुमारी जानती है जिन्हें जगत्माता जगदम्बा का पद प्राप्त होता है और यह हमेशा परमधाम में ही रहती हैं माह में केवल एक दिन पूर्णमासी को सत्संग भवन में आती हैं। पूर्णमासी के दिन जगदम्बा को विशेष रूप से अलंकृत किया जाता है। जगदम्बा सभागृह में प्रवेश करती हैं तब एक विशेष प्रकार की ध्वनि का संगीत बजता है। जिस आसन पर वह बैठती है उसके १० फीट ऊपर शिवलिंग की मूर्त्ति रखी है जगदम्बा अपने आसन में बैठकर १५ मिनट तक आँखबंद कर ध्यान करती है तभी शिवलिंग शनै: शनै: चमकने लगता है ठीक १५ मिनट पर उस शिवलिंग से एक नीला प्रकाश जगदम्बा के शरीर में पडता है प्रकाश पडते ही जगदम्बा आंख खोल देती है तभी माइक से घोषणा होती है कि परमपिता परमात्मा शिव जगदम्बा के तन में प्रविष्ट हो गये हैं अब परमात्मा के अमृत वचनों को जगदम्बा के मुख से श्रवण करो। तब जगदम्बा मधुर स्वरों से रटा-रटाया उद्बोधन करने लगती है। उस वक्त पूरे सभागृह की लाइट बन्द हो जाती है केवल एक प्रकाश का फोक्स जगदम्बा के चेहरे पर पडता है उस प्रकाश से रत्नों से जडा मुकुट चमकने लगता है। उद्बोधन समाप्त होते ही सभागृह में पुन: प्रकाश हो जाता है और मुकुट का चमकना बन्द हो जाता है। फिर जगदम्बा सभी को आशीर्वाद देती है और श्रद्धा से लोग धन अर्पण करते हैं, यह पूरा कार्यक्रम केवल एक घण्टे का होता है, यह सब सुनकर लेखराज बहुत प्रभावित हुआ और निश्चय किया कि मैं भी ऐसा ही कुछ करूंगा। हैदराबाद में आकर लेखराज ने ओम् मण्डली नाम की एक संस्था खोली और उसमें भजन कीर्तन के बाद रासलीला शुरू कर दी। तब हैदराबाद के लोगों ने इसका विरोध किया और उस भवन में आग लगा दी। उधर बम्बई में इनके गुरू किशन को उसकी गेंग के सहित पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। यह खबर जब शिवदादा को लगी तो वह तुरन्त भारत छोडने का निश्चय कर शिवकुमारी बाई को सारा कारोबार सौंपकर विदेश चला गया किशन के बयान के आधार पर पुलिस ने आनन्द भवन पर छापा मारा शिवदादा के न मिलने पर शिवकुमारी बाई को ले गई और उस भवन को अपने आधीन कर लिया। तब वहां रहने वाली शिवकुमारियों ने नगर में

जाकर अपने-२ कोठे चालु कर लिये। इस तरह से परमपिता परमात्मा शिव की लीला का पटाक्षेप हो गया यह खबर जब लेखराज को मिली तो तस्करी के धन्धे से अलग होकर अपनी जौहरी की दुकान भी बन्द कर दी। उसी समय इनके सौभाग्य से देश का बंटवारा हो गया ये करांची से भागकर भारत आ गये और राजस्थान के आबू पर्वत पर कोठी खरीद कर वहां डेरा डाला। यहां कि धर्मनिरपेक्षता नीति इन्हें वरदान सिद्ध हुई क्योंकि धर्म के नाम पर किसी को भी गुमराह कर लूटने की खुली छूट थी। यहां सत्य कहने वाले को दण्ड दिया जाता था कि उसने सत्य कहकर अमूक सम्प्रदाय की भावना को ठेस पहुंचाई है। इसलिये सत्यान्वेशी लोग सत्य को कहने में हिचकिचाते थे इस धर्म निरपेक्षता का लाभ उठाकर दादा लेखराज ने यह घोषणा कर दी कि परमपिता परमात्मा शिव मेरे तन में प्रविष्ट होकर गीता का सच्चा ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और मुझे प्रजापिता ब्रह्मा की उपाधि दी है इसलिये शिक्षा को ग्रहण करने वाली सभी ब्रह्माकुमारी कहलायेंगी। इसी धर्म निरपेक्षता का लाभ श्रीराम शर्मा ने उठाकर पहले अपने आप को देवदूत कहकर देवकन्याओं का एक गिरोह तैयार किया भारत की भोली जनता ब्रह्माकुमारी और देव कन्याओं के मायाजाल में फसती चली गई। नारीजाति के स्वाभाविक आकर्षण का लाभ इन दोनों ने खूब उठाया। प्यारे जगदीश तुमने एक अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक के पृष्ठ १६ पर लिखा है कि एक बार गुरू अपनी बहुत बडी शिष्य मण्डली लेकर उनके यहां आये। उनके स्वागत में दादा लेखराज ने हजारों रूपया खर्च किये और पृष्ठ १८ में लिखा कि गुरू ने बुलाया और ये गये, सट्टे में घाटा लग जाने से दस हजार रूपया मांगा और इन्होंने दे दिया। परन्तु जगदीश तुमने यह नहीं लिखा कि गुरू ने कहां किस शहर गांव में बुलाया था और उस गुरू का नाम क्या था? वह रहता कहां था? अब मैं जगदीश जी के ज्ञानवर्धन के लिये उस गुरू का पूरा पता बता देना चाहता हूँ कि तुम्हारे प्रजापिता ब्रह्मा का गुरू कौन था? उसका नाम क्या था? प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज कृपलानी) के गुरू का नाम किशन बुधवानी और वह बम्बई के पारस रोड गोल पीठा के पास रहता था। उसका गुरू परमपिता परमात्मा (शिवदादा तस्कर) था जो शिवकुमारी बाई के साथ आनन्द भवन के

सातवीं मन्जिल परमधाम में रहता और शिवकुमारियों के तन में प्रविष्ट हुआ करता था।

शठे शाठ्यं समाचरेत् के सिद्धान्तानुसार ही मैंने ब्रह्माकुमारी मत की समीक्षा की है। यद्यपि इनका अविद्या का भण्डार इतना विशाल है कि उसकी पूरी समीक्षा करना सम्भव नहीं है। जैसे चावल की पकती हुई हाण्डी के कुछ चावल निकालकर देखने से पूरी हाण्डी के चावलों का पता लग जाता है ठीक इसी नियमानुसार मैंने पाठकों को इनकी अविद्या रूपी हाण्डी के कुछ नमूने १५ किश्तों में प्रस्तुत किये हैं। अब इन १५ किश्तों को संग्रहित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

किसी कवि ने कहा है–

जो हल्दी जर्दी तजे, तजे खटाई आम।
जो सुशील सीलहि तजे, तो अवगुण तजे गुलाम॥

वैदिक धर्म एक संक्षिप्त परिचय

वैदिक धर्म का आधार चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) हैं। इनमें मानवोपयोगी समस्त ज्ञान–विज्ञान मूलरूप में विद्यमान हैं। इनके अतिरिक्त वेदों की व्याख्या के ऋषिकृत ग्रन्थ (४ ब्राह्मण ४ उपवेद, ६ दर्शन, १० उपनिषद् तथा ६ वेदांग) भी वैदिक धर्म का विस्तार से परिज्ञान कराते हैं।

१. वैदिक धर्म संसार के सब मतों और सम्प्रदायों से अधिक प्राचीन है। यह सृष्टि के प्रारम्भ से अर्थात् १९६०८५३०९९ वर्ष से है।

२. संसार भर के अन्य मत, पन्थ किसी पीर, पैगम्बर, मसीहा, गुरू, महात्मा आदि के द्वारा चलाये हुये हैं किन्तु वैदिक धर्म ईश्वरीय है किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

३. वैदिक धर्म में एक निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी ईश्वर को ही पूज्य उपास्य माना जाता है, उसी की उपासना की जाती है। ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात कभी भी शरीर धारण नहीं करता। राम, कृष्ण आदि ईश्वर के अवतार नहीं थे किन्तु वे श्रेष्ठ महापुरूष थे।

४. ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनों अलग–अलग और अनादि हैं।

५. वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टिक्रम के नियमों के अनुकूल हैं तथा वैज्ञानिक हैं। जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

६. सच्चे तीर्थ तो विद्या का अध्ययन, यम नियमों का पालन, योगाभ्यास सत्संग आदि हैं जिससे मनुष्य दुःख से तर जाता है।

स्थान विशेष का नाम तीर्थ नहीं है।

७. स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते जहां सुख है वहां स्वर्ग है और जहां दु:ख है वहां नरक है।

८.जो मनुष्य जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है उसको वैसा ही सुख या दु:ख रूप फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी पाप को क्षमा नहीं करता है।

९. मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है चाहे वह स्त्री या शुद्र हो।

१०. कर्म के आधार पर मानव समाज के ४ भेद हैं- जिन्हें वर्ण भी कहते हैं। अत: जन्म से कोई व्यक्ति ब्राह्मण आदि नहीं होते। अपने -अपने गुण, कर्म एवं स्वभावानुसार ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य और शुद्र बनते हैं। इसी प्रकार जन्म से कोई अछूत नहीं होता। जो गन्दा है चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो वही वास्तव में अछूत है।

११. व्यक्तिगत जीवन को ४ भागों में बाँटा गया है, इन्हें ४ आश्रम भी कहते हैं। २५ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य आश्रम, ५० वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम, ७५ वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्रम और इसके आगे सन्यासाश्रम माना गया है।

१२. वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। अच्छे कर्म अधिक करने से अगले जन्म में मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म अधिक करने पर पशु,पक्षी,कीट-पतंग आदि का शरीर मिलता है।

१३. गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान करने से पाप नहीं छूटते। वेद के अनुसार उत्तम कर्म करने से व्यक्ति भविष्य में पाप करने से बच सकता है किन्तु किये हुए पापों से नहीं बच सकता।

१४. पञ्च महायज्ञ करना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए आवश्यक है।

१. ब्रह्मयज्ञ(ईश्वर की उपासना करना)२. देवयज्ञ (हवन करना)३.पितृयज्ञ (माता,पिता,सास,ससुर आदि की सेवा करना)

४.बलिवैश्य देवयज्ञ (गाय,कुत्ता,चिडिया,चींटी आदि तथा विधवा, अनाथ,विकलांग आदि को भोजन देना)५. अतिथि यज्ञ (विद्वान् सन्यासी,उपदेशक आदि से उपदेश ग्रहण करना और उनकी सेवा सत्कार आदि करना).

१५. जीवित माता-पिता ,गुरू-विद्वान् आदि की सेवा करना ही श्राद्ध कहलाता है। मृत पितरों के नाम पर ब्राह्मणों को दिया हुआ भोजन वस्त्र,धनादि मृत पितरों को नहीं मिलता।

१६. मनुष्य के शरीर,मन तथा आत्मा को सुसंस्कारी (उत्तम) बनाने के लिए नामकरण,यज्ञोपवीत इत्यादि सोलह संस्कार को करना कर्त्तव्य है।

१७. मूर्त्ति पूजा , छुआ-छूत,जाति-पाति,जादू-टोना, डोरा-धागा ,ताबीज,शकुन,जन्मपत्री,फलित ज्योतिष ,हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, अन्धविश्वास,बलिप्रथा,सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहू विवाह आदि बातों का वैदिक धर्म में निषेध है।

१८. वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्यज्ञान को प्राप्त करके निष्काम भाव से शुभकार्मों को करता है और शुद्ध उपासना से ईश्वर के साथ सम्बध्र जोड लेता है तब उसकी अविद्या समाप्त हो जाती है, तभी जीव की मुक्ति होती है। मुक्ति में जीव ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष तक सब दु:खों से छुटकर केवल आनन्द का ही भोग करके फिर लौटकर मनुष्य जन्म लेता है।

१९. वैदिक धर्मी मिलने पर परस्पर नमस्ते शब्द बोलकर अभिवादन करते हैं।

२०. वेद में परमेश्वर के अनेक नामों का निर्देश किया गया है जिसमें मुख्य नाम ओ३म् है।

गुरूकुल आश्रम आमसेना का संक्षिप्त परिचय

१९ वीं शताब्दी में आर्षज्ञान के अभाव में जब आर्य जाति अपनी सभ्यता, संस्कृति को छोडते जा रही थी,प्रत्येक प्राणी अशान्ति की अग्नि में जल रहा था जहां एक ओर पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से नास्तिकता फैलाई जा रही थी वहीं दूसरी ओर धर्म के नाम पर ठगा जा रहा था। ऐसे विषम समय में महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ। उन्होंने जहां विभिन्न विषयों में सुलझा हुआ दृष्टिकोण उपस्थित किया वहां शिक्षा के क्षेत्र में भी एक नया दृष्टिकोण रखा। उन्होंने देखा कि जो विद्या मनुष्य को सुख-शान्ति और मुक्ति की ओर ले जाती थी अब यही मानव को दानव बना रही है। यह अनार्ष शिक्षा एवं अशुद्ध विचारों की देन है अत: ऋषि ने उसी आर्ष शिक्षाक्रम को पुन: उपस्थित किया जिसे पढ़कर राम,लक्ष्मण,सदृश भ्राता ,हनुमान,भिष्म सम ब्रह्मचारी, कृष्ण,सुदामा जैसे मित्र पैदा हो सकते हैं। महर्षि के इस स्वप्न को साकार करने के लिए सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरूकुल कांगडी की स्थापना की जो **लार्ड मैकाले** की शिक्षा का सीधा प्रतिउत्तर था। इस गुरूकुल से वैदिक धर्म के अनेक योग्य विद्वान् निकले उससे प्रभावित होकर ज्वालापुर,वृन्दावन,झज्झर आदि अनेक गुरूकुलों की स्थापना उत्तर भारत में हुई परन्तु उडीसा में आर्ष पाठ्यक्रम का कोई गुरूकुल नहीं था।

उडीसा के इस वनवासी क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचार एवं आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा द्वारा महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने के लिए गुरूकुल आश्रम आमसेना की स्थापना ७ मार्च १९६८ को एक छोटे से समारोह के साथ हुई इसके संचालन का भार गुरूकुल झज्झर के स्नातक श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (धर्मदेव स्नातक) ने सम्हाला। उनके अनथक परिश्रम से इस संस्था ने आज वृहद् रूप धारण कर लिया है।

उडीसा में तो यह अपने ढ़ंग की संस्था है ही सारे देश में आर्य समाज के क्षेत्र में भी इसका विशेष स्थान है।